॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जून, 2013 वर्ष 16, अंक 6
विक्रमी सम्वत् 2070
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 20

मा. हंसराज जन्मोत्सव एवम् डी.ए.वी. विश्वविद्यालय का उद्घाटन

प्रादेशिक सभा और डी.ए.वी. से संयुक्त तत्त्वावधान में जालंधर में नवनिर्मित विशाल परिसर में महात्मा हंसराज दिवस पर डी.ए.वी. विश्वविद्यालय का लोकार्पण संपन्न हुआ। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं प्रादेशिक सभा तथा प्रबंधकर्त्री समिति के प्रधान श्री पूनम सूरी ने अपने भावपूर्ण उद्बोधन में इस समारोह को एक ऐतिहासिक घटना और एक बहुत बड़ा मील-पत्थर बताते हुए महात्मा हंसराज के जन्म और डी. ए.वी. के अतीत का सुन्दर चित्र खींचा और कहा-''महात्मा हंसराज को जन्में 149 वर्ष हो गये, आज 150वां वर्ष शुरु हुआ है। आज बड़ी नम्रता, बड़ी श्रद्धा से, तप और त्याग की प्रतिमूर्ति उस आदर्श महामानव के श्रीचरणों में पहली डी.ए.वी. यूनिवर्सिटी जालंधर में खोली जा रही है। यह एक बहुत बड़ा कदम है।''

मान्य प्रधानजी ने डी.ए.वी. विश्वविद्यालय खोलने के विचार को 92वें वर्ष पुराना संकल्प बताया और कहा-<u>सन् 1921 में लाला लाजपतराय के एक खुल पत्र के जवाब में महात्मा हंसराज ने लिखा था-''हमें एक यूनिवर्सिटी की अनुमति दी जाए।</u> निस्संदेह हमारी यूनिवर्सिटी पूर्ण रूप से स्वतंत्र नहीं हो सकती लेकिन निश्चय ही वर्तमान अवस्था में यह बहुत उन्नत होगी। वित्तीय संसाधनों को लेकर डी.ए.वी. के चैरिटेबल स्वरूप का खुलासा करते हुए श्री पूनम सूरी ने कहा कि सौ हाथों से कमाकर हजार हाथों से धन का समाज-हित में निवेश करने का वैदिक विचार हमारा आधार रहा है। <u>अपनी संस्थाओं से प्राप्त थोड़ी-थोड़ी बचत हमारा कोष है। न तो हम उद्योगपति हैं, न ही कोई व्यापारी। महात्मा हंसराज द्वारा प्रदर्शित संसाधानों का विवेकपूर्ण उपयोग हमारा मंत्र रहा है।</u> विश्वविद्यालय का स्वप्न पूरा करने में जिन व्यक्तियों, कार्यकर्त्ताओं, समाज-सेवियों और राजनेताओं की सहायता और सहयोग मिला है उनके प्रति प्रधान जी ने आभार व्यक्त किया। आज की परिस्थिति में जब देश में 148 से अधिक निजी विश्वविद्यालय हैं, एक और विश्वविद्यालय खुल जाने से क्या होगा? इस संभावित प्रश्न का समाधान करते हुए कुलाधिपति ने 'डी.ए.वी.' अभिव्यक्ति के पीछे सक्रिय दर्शन की व्याख्या की और कहा कि 'डी.ए.वी.' की संकल्पना पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी ने दी और उन पूर्वजों ने सोचा होगा कि <u>डी.ए.वी. का ढांचा दो आधार-स्तंभों पर खड़ा होगा-एक ओर 'डी' (दयानन्द) और दूसरी ओर 'वी' (वैदिक)। इन्हीं दो आधार-स्तंभों को लेकर बना डी.ए.वी. का भवन और अब डी.ए.वी. विश्वविद्यालय।</u> मान्य प्रधान जी ने दयानन्द और वेद को कभी न भूलने का आह्वान करते हुए कहा कि <u>विश्वविद्यालय के लोकार्पण से पूर्व दो दिन तक 'चतुर्वेदशतकम यज्ञ' का आयोजन</u> इसी विचार को पुष्ट करने के लिए किया गया।

नये आकाश, नये आयाम, सोचने और प्राप्त करने हैं -पूनम सूरी

उद्घाटन से पूर्व 4 दिवसीय यज्ञ की पूर्णाहुति पर उपस्थित श्री पूनम सूरी जी सपत्नीक साथ में डी.ए.वी. विश्वविद्यालय के कुलपति डा. आर.के. कोहली

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

यज्ञवेदि पर उपस्थित संन्यासीवृन्द यज्ञ व्यासपीठ से संचालन करते, श्री एस.के. शर्मा जी एवम् युवकों ने ओ३म् ध्वजों से यज्ञ स्थल को सुशोभित किया।

मान्य प्रधानजी ने लाहौर में आर्यसमाज के उन दो कमरों का भावुक शब्दों में स्मरण किया जहाँ **पहला डी.ए.वी. स्कूल 1886 में आरम्भ हुआ था। आर्यसमाज को डी.ए.वी. की मां बताते हुए कहा-आज डी.ए.वी. के पास हजारों वर्ग मीटरों में निर्मित भवन हैं, पर याद रहे कि हमारा जन्म तो उन दो कमरों में हुआ जो आर्यसमाज द्वारा दिये गये थे।** उन्होंने आगे कहा कि स्वयं महात्मा हंसराज जी ने एक पत्र में लिखा था-''मैं अपने आपको या किसी अन्य व्यक्ति को डी.ए.वी. का संस्थापक नहीं मानता। **डी.ए.वी. की स्थापना की है आर्यसमाज ने।** यह आर्यसमाज की भावनाएं हैं, उनके उसूल हैं, उनके नियम हैं, जो डी.ए.वी. को दिन-दुगुनी रात-चौगुनी उन्नति की ओर ले जा रहे हैं।'' **उन्होंने सभी प्राचार्यों, अध्यापकों तथा कर्मचारियों का आह्वान किया कि आर्यसमाज जो हमारी मां है उसकी सेवा तथा रक्षा करने में पूर्ण मनोयोग से जुट जाएं।**

तमसो मा ज्योर्तिगमय के प्रतीक दीपक को प्रज्ज्वलित करते श्री पूनम सूरी जी साथ में डी.ए.वी. विश्वविद्यालय के कुलपति डा. आर. के. कोहली एवं पंजाब विश्वविद्यालय, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति

श्री पूनम सूरी ने डी.ए.वी. विश्वविद्यालय खोलने की स्वीकृति देने और इसकी आधार शिला रखने के लिए स्व. श्री ज्ञान प्रकाश जी चोपड़ा की कृतज्ञता भरे शब्दों में याद किया। मान्य प्रधानजी ने सार्वदेशिक सभा में व्याप्त फूट पर अपनी हार्दिक चिंता व्यक्त की और एकता बनाने की प्रार्थना की।

मान्य कुलाधिपति ने डी.ए.वी. विश्वविद्यालय के विशिष्ट स्वरूप का खुलासा किया और छात्रों के हित में उच्चस्तरीय, संतुलित, सुविधा-संपन्न पाठ्यक्रमों तथा शोध-कार्यक्रमों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि ज्ञान और आध्यात्मिकता का ठोस आधार लेकर डी.ए.वी. विश्वविद्यालय छात्रों को पूर्ण मानव बनने के अवसर प्रदान करेगा, जहाँ दयानन्द और वैदिक विचार सुदृढ़ आधार प्रदान करेंगे। इस विश्वविद्यालय से आगे और अधिक और ऊँचे लक्ष्यों की प्राप्ति की बात करते हुए प्रधान जी ने देश-विदेश में 780 से अधिक डी.ए.वी. संस्थाओं के विस्तार का विवरण दिया और कहा कि 'Best Chain of schools in country' जैसे सम्मानों से हमें प्रेरणा और स्फूर्ति लेनी है। **नये आकाश, नये आयाम, सोचने और प्राप्त करने हैं।**

अंत में सर्वस्व त्यागी, आर्यसमाज की मान-मर्यादा के उन्नायक, अज्ञानान्धकार मिटाने के आंदोलन के नायक, नये पंजाब के निर्माता महात्मा हंसराज के चरणों में श्रद्धांजलि देते हुए मान्य प्रधानजी ने डी.ए.वी. के भावी विकास और उन्नति की प्रार्थना की।

मान्य प्रधान जी ने 'आर्यजगत्' तथा 'आर्यन् हैरिटज' पत्रिकाओं

(शेष पृष्ठ 19 पर)

श्री पूनम सूरी जी का मंच पर स्वागत करते श्री एस.के. शर्मा जी, पंजाब विश्वविद्यालय के कुलपति का सम्मान करती श्रीमती ककरीया एवम् हंसराज विशेषांक (आर्य जगत्) का विमोचन करते श्री पूनम सूरी जी एवं अन्य उपस्थित महानुभाव

क्या तीर्थ यात्रा का कोई महत्व है आज...?

लेख में इस शंका का समाधान करने का प्रयत्न किया है इसलिए पत्र के रूप में यह विचार हर उस पुत्री के लिए है जो धर्म में थोड़ी भी रूचि रखती हो ताकि उसे सत्यज्ञान हो सके।

मेरा इस पत्र का विषय है तीर्थ स्थान और तीर्थ यात्रा। तीर्थ यात्रा के लिए लोग घर से चलते थे ग्रुप बना कर और अच्छी धार्मिक सोसाइटी को साथ लेकर, धर्म में प्यार रखने वाले लोगों को साथ लेकर। रास्ते में धार्मिक विषयों पर बात होती थी। भजन गाते जाते थे। एक दूसरे के विचारों का आदान-प्रदान होता था। यातायात के साधन न थे। कुछ लोग जिनकी आर्थिक व्यवस्था अच्छी नहीं थी वे पैदल जाते थे। कुछ लोग बैलगाड़ियों पर और कुछ रेलगाड़ी पर। एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखते थे। एक-दूसरे को बहुत कुछ सिखाते थे। ऐसी तीर्थयात्रा का बहुत लाभ होता था। परन्तु आज कल लोग टैक्सियों में जाते हैं। कार में तेज रिकार्ड लगा होता है, अश्लील संगीत चलता रहता है। परिवार के अपने ही सदस्य होते हैं, कभी धर्म चर्चा होती ही नहीं। धार्मिक विचारों का आदान-प्रदान तो दूर की बात है। यदि रास्ते में किसी स्थान पर बैठेंगे तो शराब निकाल कर पी लेंगे। नहीं तो कम से कम सिग्रेट तो जरूर ही कुछ लाभ नहीं ऐसी तीर्थ यात्रा का। इससे तो घर पर बैठना अधिक लाभदायक है।

तीर्थ स्थान पर कोई लाभ है या नहीं? था, परन्तु अब नहीं। हाँ लाभ हो सकता है। पहले चूंकि यातायात के साधन उपलब्ध न थे इसलिए घर से निकल पड़ते थे कि इस बहाने धर्म की चर्चा भी सुनेंगे और अपने देश को भी देखेंगे। वास्तव में यह भारतदर्शन था ताकि एक-दूसरे को मिलें। उत्तर वालों को पता लगे कि दक्षिण वाले लोग कैसे हैं, कैसा पहरावा हैं, कैसा खानपान है? और दक्षिण वालों को उत्तरवालों की जानकारी मिले। एक-दूसरे को मिलकर, जानकर समझ कर हम सब एकता में पिरोये जा सकते हैं। यह था उद्देश्य। किन्तु आजकल तो विज्ञान ने इतनी उन्नति की है कि मनुष्य प्रातः देहली में होता है तो सायं विलायत में। दो घण्टे काम किया और फिर वापिस। इस भाग दौड़ में क्या समझेंगे उन लोगों के बारे में। जिन्दगी तीव्र गति से चल रही है। किसी के पास समय ही नहीं। तीर्थ स्थानों पर गए न गए एक जैसा है। लोग तीर्थ मन्दिरों में जाते हैं मूर्ति के आगे माथा झुकाया और वापिस आ गए और मन में यह झूठी खुशी कि शायद इस स्थान पर आकर बहुत पुण्य कमा कर चले हैं। वास्तविक रूप से उद्देश्य था कि पहाड़ देखे जायं, वहां पर जाकर रहा जाए। वह मुनि और संन्यासी जो कन्दराओं और गुफाओं में रहते हैं, उनसे मिला जाये, उनसे धर्मशिक्षा प्राप्त की जाए। उनसे जीने का ढंग सीखा जाए। वह विद्वान् जो किसी दूसरे शहर, नगर, पहाड़ या तीर्थ स्थान पर रहते हैं उनको सुनकर जीवन को सफल बनाया जाए। जब तक इस बात को सम्मुख रखकर तीर्थ स्थान को नहीं जाया जाता तब तक कोई लाभ नहीं ऐसे स्थान पर जाने का। यदि इस उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है तो तीर्थ स्थान पर जाना सार्थक हो सकता है।

अब रही बात तीर्थ स्थान की। सुनो, जल से तो शरीर शुद्ध होता है, सत्याचरण से मन पवित्र होता है, तप करने से जीवात्मा और ज्ञान से बुद्धि पवित्र होती है। किसी स्थान से मन, बुद्धि या आत्मा पवित्र नहीं हो सकती। जैसे मान लो सन्ध्या उपासना यदि करनी है तो आवश्यक है कि स्नानादि करके बैठें। इसलिए स्नान की अति आवश्यकता है परन्तु यह नहीं कि स्नान कर लिया तो मानो कोई पुण्य कर लिया-**मन तो मलिन वैसा ही मूर्ख रहा, गंगा में रोज जा के नहाया तो क्या हुआ।।**

पुराने युग में जब लोग बाहर जाया करते थे तो किसी नदी के तट पर बैठ कर पहले स्नान करते थे, फिर उसी एकान्त स्थान पर बैठ कर प्रभु का भजन करते थे या किसी झरने पर स्नान करते थे और फिर प्रकृति की गोद में बैठकर प्रभु का ध्यान करते थे। ऐसे स्थान धीरे-धीरे तीर्थ स्थान कहलाने लग गए। परन्तु आजकल लोग ऐसे स्थानों पर जाते हैं, स्नान करते हैं, और वापिस आ जाते हैं कि हमने तीर्थ स्नान कर लिया, मानो कोई धार्मिक मोर्चा मार लिया।

सो बेटी, वास्तविकता को पहचानो। ईश्वर का स्मरण करो। चाहे घर पर बैठ कर चाहे मन्दिर में बैठ कर। पहाड़ की गुफा में बैठकर या नदी के तट पर बैठ कर। परन्तु ध्येय यही होना चाहिए कि हमने ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और पूजा करनी है। इतना ध्येय काफी नहीं कि हमने केवल उसी स्थान पर पहुंचना है या उस स्थान पर जा कर स्नान करके लौट आना है। हमने तो वहां जाकर ज्ञान के अनमोल मोती ढूंढ़ कर सब में बांटने हैं।

अजय टंकारावाला

(डॉ. आनन्द अभिलाषी जी की पुस्तक से प्रेरित)

टंकारा समाचार **के प्रसार में सहयोग दें**

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

ऋषि जन्मभूमि की ऋषि भक्तों से अपील

मान्यवर

सादर नमस्ते।

आशा है कि आप स्वस्थ एवं कुशल होंगे। मैं हर समय आपके स्वास्थ्य लाभ, दीर्घायु एवं आपका परिवार फले फूले परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ।

टंकारा स्थित ऋषि जन्म गृह जहां बाजार से तंग गली से होकर ऋषि भक्तों को जन्म गृह तक पहुंचना होता है। आए हुए कई गणमान्य व्यक्तियों ने आगन्तुक पुस्तिका में इस विषय की ओर ध्यान आकर्षित किया है कि जन्म स्थान का मुख्य द्वार एक भव्यता लिए होना चाहिए। इस विषय में जानकारी प्राप्त की तो मुख्य द्वार को चौडा करने के लिए बाजार में से एक दुकान और दुकान के पीछे का एक मकान जिसमें कोई व्यक्ति नहीं रहता, को ट्रस्ट द्वारा खरीदना होगा।

इस वर्ष टंकारा की वार्षिक बैठक में इन्हें दान स्वरूप राशि प्राप्त कर क्रय करने का निश्चय किया गया और इस संदर्भ में श्री हंसमुख परमार को उपरोक्त मकान मालिकों से बातचीत करने हेतु अधिकृत किया गया। उनके अनुसार 14,51,000/- रूपये में गली के नुक्कड़ पर सबसे प्रथम दुकान प्राप्त हो रही है, हम 2,00,000/- अग्रिम दे उसे पक्का कर रहे हैं।

आपकी ऋषिभूमि के प्रति अपार श्रद्धा है इस कारण आपसे करबद्ध निवेदन है कि आप अपनी ओर से अपनी संस्था की ओर से एवं अन्य ऋषि भक्तों से इस मद में अधिक से अधिक धनराशि एकत्र करवाने की कृपा करेंगे। आप यह धनराशि **चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा "श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा" के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा टंकारा के पते पर भिजवा सकते हैं।**

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

-:निवेदक:-

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्य**	**रामनाथ सहगल**	**योगेश मुंजाल**
प्रधान	उपप्रधान	मन्त्री	संयोजक

ऋषि जन्म गृह विस्तार समन्वय समिति

मानव-मात्र के लिए आदर्श शिक्षायें

❒ आचार्य भगवानदेव वेदालंकार (वैदिक प्रवक्ता)

इस आर्यावर्त्त देश में समय-समय पर ऋषियों का, योगियों का त्यागी-तपस्वी महापुरुषों का अवतरण होता रहा है जैसे- सतयुग में सत्यवादी राजा हरिशचन्द्र जी हुए, त्रेतायुग में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी, द्वापर में योगीराज श्री कृष्ण जी का जीवन अनुकरणीय रहा, कलियुग में वेदों के विद्वान, धर्मशास्त्रों के ज्ञाता, तर्क शिरोमणि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की आदर्श शिक्षायें, प्रेरणाप्रद विचार, उनका आदर्श जीवन, त्याग-तप मानव-मात्र के लिए अनुकरणीय रहा है। उनके कल्याणकारी आदर्शों पर, शिक्षाओं पर चलने से ही मानव मात्र का कल्याण सम्भव है।

1. 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ने की शिक्षा- स्वामी दयानन्द जी बड़े ही ज्ञानी पुरूष थे। उन्होंने पूरे अनुभव से, वेद-शास्त्रों के प्रमाण देकर एक शोध ग्रन्थ, ज्ञान का भण्डार, अनेक शिक्षाओं से परिपूर्ण, क्रान्तिकारी ग्रन्थ का प्रकाश किया, जिसको पढ़कर, स्वाध्याय करके न जाने कितने सपूतों ने अपने जीवन का कायाकल्प किया है। जीवन-जीने के वास्तविक उद्देश्य को जाना। उन महापुरुषों में उदाहरण स्वरूप कुछ नाम जैसे कि स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा हंसराज जी, स्वामी दर्शनानन्द जी, पं. लेखराम जी, गुरूदत्त विद्यार्थी, पं. अखिलानन्द जी, स्वामी सत्यानन्द जी, श्याम जी कृष्ण वर्मा, ब्रह्मचारी रामप्रसाद 'बिस्मिल' आदि-आदि अनेकानेक भारत-माता के वीर सपूतों ने 'सत्यार्थप्रकाश' को पढ़ा और उसके बाद जीवन-जीने का लक्ष्य प्राप्त किया।
यह ग्रन्थ 14 चौदह समुल्लास अर्थात् चौदह विभागों में रचा गया है।

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का प्रयोजन- ''मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। इसलिए विद्वान आचार्यों का यही मुख्य काम है कि वे स्वयं अपना हित-अहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

2. ईश्वर के 'ओ३म्' नाम का ध्यान करने की शिक्षा- महर्षि स्वामी दयानन्द जी से पूर्व देश में लोग वेद के सच्चे मार्ग को भूल चुके थे। बहुदेवतावाद का प्रचलन था। ईश्वर के स्थान पर लोग प्रकृति की, तुलसी, पीपल जैसे वृक्षों की पूजा करने लगे थे। कोई काली देवी, कोई दुर्गा, कोई लक्ष्मी, कोई गणेश, कोई शिवलिंग, कोई चतुर्भुज धारी विष्णु की, कोई सर्वधारी शिव की मूर्तियां बनाकर, गन्डे, ताबीज, तिलक, मालायें पहनकर, झांज-मंजीरा बाजा बजा-बजाकर, नाच-कूद उछल-उछल कर पूजा करने की वेद-विरूद्ध परिपाठी जन्म ले चुकी थी। ऐसे समय में महर्षि ने हमें वेदों का, शास्त्रों का, उपनिषदों का प्रमाण देकर ईश्वर के सर्वरक्षक, सृष्टिकर्त्ता 'ओ३म्' नाम का ध्यान करने की शिक्षा प्रदान की।

''एको ब्रह्म द्वितीयो न अस्ति'' ईश्वर जो 'ब्रह्म' रूप है। सबसे बड़ा है। सबसे महान् है वह एक ही है। वह दो, तीन या उससे अधिक संख्या वाला नहीं है। **''ओं खम्ब्रह्म''** यजुर्वेद अ.40, मन्त्र-17 अर्थात् उस आकाश के समान व्यापक परमेश्वर का मुख्य और निज नाम **'ओ३म'** ही है। हमें उसी एक परब्रह्म परमेश्वर रूपी 'ओ३म्' का ही ध्यान करना चाहिए। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के सौ नामों की व्याख्या की गई है जैसे-सबसे बड़ा होने से ईश्वर का नाम 'ब्रह्म', जो बहुत प्रकार से जगत् को प्रकाशित करे इससे ईश्वर का नाम 'विराट' जो ज्ञानस्वरूप, सर्वज्ञ, जानने प्राप्त होने और पूजा करने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का नाम 'अग्नि' है। जो शिष्ट, मुमुक्षु मुक्त और धर्मात्माओं से ग्रहण किया जाता है, जो सबसे श्रेष्ठ है, इसलिए उसका नाम 'वरूण' है जो अखिल ऐश्वर्ययुक्त है, इससे उस परमात्मा का नाम 'इन्द्र' है जो चर और अचररूप जगत् में व्यापक होने से परमात्मा का नाम 'विष्णु' है। जो सबका रक्षक जैसा पिता अपने सन्तानों पर सदा कृपालु होकर, उनकी उन्नति चाहता है इससे उसका नाम 'पिता' है। जैसे पूर्ण कृपायुक्त जननी अपनी सन्तानों का सुख और उन्नति चाहती है वैसे परमेश्वर भी सब जीवों की बढ़ती चाहता है इससे परमेश्वर का नाम 'माता' है। जो प्रकृति आदि लड़ और सब जीवन प्रख्यात पदार्थों का स्वामी वा पालन करने हारा है, इससे उस ईश्वर का नाम 'गणेश' वा 'गणपति' है। जो समग्र ऐश्वर्य से युक्त वा भजने योग्य है इसलिए उस ईश्वर का नाम 'भगवान' है। जो कल्याण स्वरूप ओर कल्याण का करने हारा है इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'शिव' है। ये उपरोक्त सभी नाम परमेश्वर के ही हैं परन्तु इनसे भिन्न परमात्मा के असंख्य नाम हैं क्योंकि जैसे परमेश्वर के अनन्त गुण-कर्म स्वभाव हैं वैसे उसके अनन्त नाम हैं। ये सभी नाम 'ओ३म्' के ही विशेषण हैं। ध्यान, मनन एवं चिन्तन करना चाहिए। इससे जीवन में सुख, शान्ति और आनन्द की वृद्धि होगी। समस्याओं का सफल निदान होगा। किसी कवि का यह कथन कितना सार्थक है कि-

''ओम् नाम सबसे बड़ा, इससे बड़ा न कोय।
जो ओम् का सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय।।''
स्वाँस-स्वाँस पर ओ३म्, भज वृथा स्वाँस मत खोय।
ना जाने इस स्वाँस का, आवन होय न होय।।

अन्धविश्वासों से बचने की शिक्षा-स्वामी दयानन्द जी का जन्म जिस युग में हुआ, उस युग में चारों ओर देश में, समाज में तथा परिवारों में अविद्या, अन्धविश्वासों का अज्ञानान्धकार फैला हुआ था। उदाहरण के रूप में- (1) व्यक्ति अपने काम पर जा रहा होता, बिल्ली रास्ता काट जाती, व्यक्ति डर जाता था, अब काम नहीं बनेगा। (2) किसी को उसी समय छींक आ जाती, चाहे वह छींक जुखाम, नजला या बीमारी अवस्था में ही आयी हो। (3) कोई एकाक्षी (काणा) व्यक्ति सामने आ जाता, उसे भी अपशकुन मान लिया जाता था। (4) कोई गरीब व्यक्ति जो आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा होता था, या सफाई कर्मचारी, जन्मजात अपने को ब्राह्मण मानने वाले व्यक्ति से छू जाता था, तो अनर्थ हो जाता था। (5) इसी प्रकार उस समय स्त्रियों को पढ़ाना, अच्छा नहीं माना जाता था, नारी घर की चार दीवारी में पर्दे में कैद थी। गांव, देहात, मुसलमान परिवारों में आज भी कन्याएँ शिक्षा-ग्रहण नहीं कर पा रही हैं। इसके अतिरिक्त बाल-विवाह, अनमेल-विवाह, सती-प्रथा, विधवा-विवाह तथा बलि-प्रथा जैसी कुरीतियां, कुप्रथाएं, कुत्सित रीति-रिवाजों का स्वामी दयानन्द जी ने और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने उन अन्ध विश्वासों के लिए विनाश के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की, वैदिक साहित्य लिखा। गुरुकुलों की स्थापना की। छुआछूत, भूत प्रेत, फलित-ज्योतिष,, तिलक, मालाओं का धारण करना, तान्त्रिकों के भ्रम जाल में फंसना इत्यादि बातों के बहकावे में न आना। जिनसे सन्तानें, बच्चे, बड़े, बूढ़े किसी धूर्त के

माया-जाल में न फंस सकें ऐसी शिक्षा का उपदेश किया।

माता-पिता एवं आचार्य की शिक्षा- शास्त्रों में बच्चों के तीन उत्तम शिक्षक माने गये हैं अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य। महर्षि याज्ञवल्कय का वचन है-

''**मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषोवेद**''- शतपथ ब्राह्मण अर्थात् इन्ही तीनों की उत्तम शिक्षा से मनुष्य ज्ञानवान् होता हैं वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्। जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हो। माता-पिता को अति उचित है कि वे शुद्ध शाकाहारी भोजन पर अधिक ध्यान दें। मद्य, नशीले, पदार्थों, बुद्धिनाशक, रूक्ष पदार्थों का परित्याग कर, जो शान्ति, आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता को बढ़ाने वाले पदार्थ हैं जैसे-दूध, घृत, शहद, फल, सब्जी तथा उत्तमोत्तम अन्न पान की शिक्षा दें।

किसी ने ठीक ही कहा है कि-

''जैसा खाये अन्न वैसा बने मन, जैसा पिये पानी वैसा बने वाणी''।

माता की शिक्षा- बच्चे की पहली गुरु 'माता' को माना गया है। ''माता निर्माता भवति'' माता बच्चे को लोरियाँ सुना-सुना कर संस्कार देती है। बच्चे का निर्माण करती है। बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करे जिससे सन्तान सभय हों और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावें। छोटे-बड़े, मान्य, पिता, माता, गुरु, आचार्य आदि के साथ शिष्टाचार का व्यवहारिक ज्ञान, बातचीत करने का तरीका उनके पास उठने-बैठने आदि की भी शिक्षा दिया करें जिससे कहीं उनका अयोग्य व्यवहार न हो सके बल्कि सर्वत्र प्रतिष्ठा हो। सन्तान किसी धूर्त, ढोंगी, बेहरूपिया के बहकावे में न आवे। जिससे फलित ज्योतिष, भूत-प्रेत आदि मिथ्या बातों का विश्वास न हो।

इसी प्रकार पिता शिक्षा करे कि हमारी सन्तानें, चोरी, आलस्य, प्रमाद, नशीले मादक द्रव्य, मिथ्या भाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या, द्वेष, मोह आदि दोषों को छोड़ने के लिए तैयार रहें। छल, कपट, धोखा देना, अभिमान करना, कृतह्नता से अपना हृदय दुःखी होता है। दूसरों का तो कहना ही क्या। क्रोधादि दोष छोड़ और कटु-वचन को त्याग कर, शान्त और मधुर वचन ही बोले। बड़ो का सम्मान करें, उन्हें ऊँचा आसन दें, विनम्रता से 'नमस्ते' करें।

''यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपस्यानि नो इतराणि'' यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है। माता, पिता और आचार्य अपनी सन्तान और शिष्यों को सदा यह उपदेश करें कि जो हमारे धर्मयुक्त कर्म हैं उन उन का ग्रहण करें और यदि हमारे जीवन में भी यदि कोई दुर्गुण, दुर्व्यसन, दुर्व्यवहार आदि दोष, कमजोरी हैं उनका त्याग करें। सज्जनों का संग और दुष्टों का त्याग करें। विधिपूर्वक ईश्वर की उपासना, प्रार्थना करें। मद्य, शराब, अण्डा, मांस आदि के सवन से अलग रहें। जिस प्रकार आरोग्य, विद्या और बल प्राप्त हो, उसी प्रकार के शुद्ध शाकाहारी भोजन करें।

इस प्रकार सन्तानों को उत्तम शिक्षा, विद्या, गुण, कर्म और स्वभाव रूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। काश! आज के माता, पिता और शिक्षक अपनी नई पीढ़ी को सही दिशा-बोध देने में अहम भूमिका निभाते।

आज के युग में महर्षि दयानन्द जी की शिक्षा की और अधिक आवश्यकता है-

कहने की और अधिक आवश्यकता नहीं, सारी उन्नतियों का केन्द्र ऋषि-महर्षियों की वैदिक शिक्षा है। आज की युवा पीढ़ी, नवयुवक और नवयुवतियाँ दिशा, भ्रमित हैं। उनके दिशाहीन आदर्श टी.वी. चैनल या फिल्मों के नायक एवं नायिकायें हैं, जिनके द्वारा लगातार अश्लिलता, चरित्रहीनता, माडल के नाम पर अर्द्धनग्नता, पॉप डांस आदि की अपसंस्कृति फैलाई जा रही है। जिससे नैतिक मूल्यों का पतन हुआ है। आज के इस अत्यन्त भौतिक युग में भी महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणाप्रद आदर्श शिक्षाओं की और अधिक आवश्यकता है जिसका एक संक्षिप्त सा उदाहरण लेख के माध्यम से प्रस्तुत किया है। ऋषि के आदर्श शिक्षायें और भी हैं, जिनका उल्लेख अगामी लेख में किया जायेगा।

- ए 94, विकासनगर, फेस-3, नई दिल्ली-110059, मो. 9250906201

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय लिया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

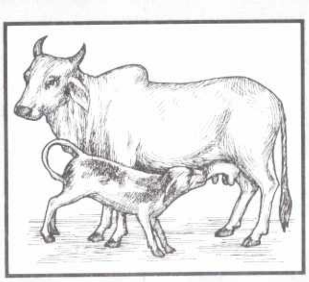

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 15000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

ओ३म् परमात्मा का सर्वोत्तम अभिधाम

❑ डॉ. धर्मवीर सेठी

अ उ और म्-दो स्वर और एक व्यंजन- के योग से बना अद्भुत शब्द 'ओ३म्' सृष्टि, स्थिति और प्रलय का द्योतन करने वाले न जाने कितने ही दार्शनिक भाव अपने अन्तस् में समेटे हुए है। कहीं-कहीं इस शब्द को 'ओम्', ओं, ॐ, ऊँ इन रूपों में भी लिखा हुआ आप देखते होगें। परन्तु वेदानुकूल इस की शुद्ध वर्तनी 'ओ३म्' है जिसमें 'प्लुत' स्वर का प्रयोग किया गया है। उच्चारण करते समय अपने फेफड़ों में पूरी सांस भर कर फिर सांस छोड़ते हुए इस शब्द का होंठ स्वतः धीरे-धीरे बन्द होने क उच्चारण होता है। पंजाबी भाषा की गुरुमुखी लिपि में इसे ओंकार लिखा जाता है।

अपनी प्राचीनतम सनातन वैदिक मान्यताओं को अक्षरशः मानने और डंके की चोट से मनवाने वाले आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जब अपने प्रथम दार्शनिक ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की तो मानों आरम्भ में उस परम पिता परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु ही उन्होंने सम्भवतः प्रथम समुल्लास (अध्याय) में ईश्वर के एक सौ नाम गिनवा कर यह बताने का प्रयास किया कि वैदिक साहित्य में इन शब्दों का प्रयोग, प्रकरणानुकूल, परमेश्वर के नाम के लिए ही किया गया है और कि परमेश्वर का कोई भी नाम अनर्थक नहीं है। जैसे परमेश्वर के अनन्त गुण, कर्म, स्वभाव हैं, अनेक अनुरूप वैसे ही उनके अनन्त नाम भी हैं।

इस गम्भीर विषय को अधिक स्पष्ट करने के लिए यह आवश्यक है कि उन सौ नामों का उल्लेख यहाँ अवश्य किया जाए जो अधोलिखित हैं:

ओ३म् (ओं, ओम्), हिरण्यगर्भ, खम, वायु, ब्रह्म, तैजस, अग्नि, ईश्वर, मनु, प्रजापति, आदित्य, अज, इन्द्र, प्राज्ञ, नारायण, सत्, प्राण, मित्र, चन्द्र, चित् (ज्ञान), वरूण, मङ्गल, आनन्द ब्रह्मा, अर्यमा, बुध, अनादि, अनन्त, विष्णु, बृहस्पति, शुक्र, नित्य, रूद्र, उरुक्रम, शनैश्चर, शुद्ध, शिव, सूर्य, राहू, अक्षर, परमात्मा, केतु, बुद्ध, स्वराट्, परमेश्वर, यज्ञ, मुक्त, सविता, निराकार, होता, कालाग्नि, देव, बन्धु, निरंजन, दिव्य, सुपर्ण, कुबेर, गणेश (गणपति), गरुत्मान्, पृथिवी, पिता, जल, पितामह, विश्वेश्वर, मातरिश्वा, आकाश, प्रपितामह, भूमि, अन्न, माता, देवी, विराट्, अन्नाद, शक्ति, अत्ता, आचार्य, विश्व, वसु, गुरु, श्री, लक्ष्मी, भगवान्, कवि, सरस्वती, सर्वशक्तिमान्, पुरुष, न्यायकारी, विश्वम्भर, काल, दयालु, शेष, अद्वैत, आप्त, निर्गुण, शङ्कर, सगुण, महादेव, अन्तर्यामी, प्रिय, धर्म्मराज, स्वयम्भु, यम, कूटस्थ।

इन नामों का विश्लेषण करते हुए कुछ आश्चर्यचकित करने वाले तथ्य पाठक के सामने उपस्थित होते हैं। सप्ताह के सभी सात दिन सोम से रविवार तक परमात्मा के नाम हैं। किसी के ऊपर न मंगल हावी होता है न शनि का प्रकोप जो पाखण्डियों ने जनता को भयभीत करने के लिए बना रखे हैं पौराणिकों की त्रिमूर्ति-ब्रह्मा, विष्णु, महेश से भी परमात्मा का ही द्योतन होता है। यहाँ तक कि राहू और केतु भी इसी श्रेणी में आते हैं। पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश-ये पंच तत्व भी उसी परमेश्वर की लीला का बखान करते हैं। सत्, चित्, आनन्द तो उस परमेश्वर का स्वरूप हैं ही। अनादि, अनन्त उसे ही तो कहा जाता है। नित्य, शुद्ध, बुद्ध और मुक्त उसी परमेश्वर के ही तो स्वभाव हैं। वह दयालु परन्तु न्यायकारी है। इसीलिए तो जीव जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है। साकार और निराकार, निरंजन शब्द भी प्रकरणानुसार उसी दिव्यता की ओर संकेत करते हैं। नौ देवियों की जो चर्चा पुराणों में की गई है उन्हें भी ऋषिवर ने अलग-अलग परिभाषाओं के साथ परमेश्वर के नाम ही माना है। विश्व का भरण-पोषण करने के कारण वह 'विश्वम्भर' भी है। 'शिव' अर्थात् कल्याण-जो सब का कल्याण करने वाला है 'तन्मे मनः शिव संकल्पं अस्तु'। अन्याय करने वालों को रूलाने के कारण वह 'रूद्र' भी है। सबके द्वारा वरणीय (चाहने वाला) और सबको चाहने वाला होने से वह 'वरूण' भी है। 'अग्नि' अग्रणी भवति'। ध्यान रहे चार वेदों में से पहले वेद ऋग्वेद का शुभारम्भ ही 'अग्नि' शब्द से होता है-'अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवं ऋत्विजं। होतारं रत्नधातमम्'।

इस लम्बी सूची में कुछ नाम (शब्द) तो पर्यायवाची हैं, इसमें सन्देह नहीं। परमेश्वर को,

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविडं त्वमेव, त्वमेव सर्वमम देव देव॥

जब कहा जाता है तब माता, पिता, बन्धु, विद्या (सरस्वती) आदि सभी उसी के नाम माने गए हैं। शिव का पर्याय शंकर भी है। शम् अर्थात् 'कल्याण' करोति इति शंकरः' जो सृष्टि के जीवों का कल्याण करता है वही ईश्वर शंकर भी है।

एक और सारगर्भित नाम है 'हिरण्यगर्भ' अर्थात् जो सूर्यादि तेजस्वरूप पदार्थों का गर्भ अर्थात् उत्पति और निवास स्थान है। यजुर्वेद का एक मन्त्र है-

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यातुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

इस मन्त्र से यह बात भी स्पष्ट होती है कि वह परमेश्वर एक ही है, नाम चाहे उसके अनेक क्यों न हों और उसीने पृथिवी और द्युलोक को धारण भी किया हुआ है।

इस ओंकार, सतगुर परसाद, कर्ता, पुरख, निरभो, निरवैर, अकाल जूनी इत्यादि अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत दे सब बन्दे। एक नूर ते सब जग उपज्या, कौन भले कौन मन्दे।। इन्द्रं, मित्रं वरूणमग्निमाहुरथो दिव्यस्स सुपर्णो गरुत्मान्। एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।। (ऋग्वेद-1.164.46) परमेश्वर के नामों की इस लम्बी सूची में 'ओ३म्' ही एक ऐसा नाम है जिससे परमेश्वर के अनेक नामों का ज्ञान उपलब्ध हो जाता है। परन्तु इन नामों को प्रकरणानुसार ही ग्रहण किया जाना चाहिए। यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 17 के अनुसार 'ओम खं ब्रह्म' ये तीनों शब्द भी उसी परमेश्वर के नाम हैं। 'अवति इति ओम्'- रक्षा करने से, 'आकाशम् इव व्यापकत्वात् खम्' आकाश की भाँति व्यापक होने से और 'सर्वेभ्यो बृहत्वात् ब्रह्म' अर्थात् सबसे बड़ा होने से -ये सब परमेश्वर के ही नाम है। छान्दोग्य और माण्डूक्य उपनिषदों में भी इसी 'ओम्' की चर्चा है।

इस चर्चा में मैं कठोपनिषद् के यम-नचिकेता संवाद के एक अंश

को उद्धृत करने का मोह संवरण नहीं कर सकता। जिज्ञासु बालक नचिकेता ने यमाचार्य को कहा कि हे भगवन्! जो आत्मतत्व, धर्म और अधर्म से पृथक है, जो कारण और कार्य रूप प्रपंच से पृथक है, जो भूत और भविष्य काल से भी पृथक है- ऐसी उस परमासत्ता से मुझे भी परिचय कराइए। तो आचार्य उसे आत्मतत्त्व पाने का साधन बताते हैं,

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्तेपदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्॥ 1.2.15

अर्थात् सभी वेदादि शास्त्र जिस पद (शब्द-परम सत्ता) का वर्णन करते हैं, जिसको जानने के लिए मुमुक्षु (मोक्ष की इच्छा वाले) अनेक प्रकार की तपस्या करते हैं, जिसको पाने के लिए यति लोग ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, उस परमसत्ता को अत्यन्त संक्षेप में मैं तुझे बताता हूँ और वह है 'ओ३म'। कैसे गागर में सागर भर दिया गया है।

इसी प्रसंग में यमाचार्य आगे कहते हैं,

एतद्धयेवाक्षरं ब्रह्म, एतद्धयेवाक्षरं परम्।
एतद्धयेवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत्॥
एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम्।
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्म लोके महीयते॥ 1.2.16, 17

इन दोनों मंत्रों में 'ओ३म' अर्थात् ब्रह्म की महिमा का वर्णन है। ओ३म् का स्मरण, ध्यान, जप ही ब्रह्म का वास्तविक स्मरण है और यह जप सभी जपों में उत्कृष्ट है। यह ओ३म् जीवन नौका को पार करने का परम साधन है। जो इसके महत्व को जान जाता है वह ब्रह्मलोक को पा लेता है। उसकी सब कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं।

अस्तु! ईश्वर के अन्य सब नाम गौण हैं और 'ओ३म्' नाम ही मुख्य है। मुमुक्षु को इसी का जप और ध्यान करना चाहिए।

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता अध्याय 8 श्लोक 12-13 में भी इसी 'ओ३म्' के महत्व का ही बखान किया गया है।

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये॥

वेद के जानने वाले विद्वान सच्चिदानन्द रूप परम पद को अविनाशी कहते हैं, आसक्ति हीन यत्नशील संन्यासी महात्मा जिसमें प्रवेश करते हैं और जिस परम पद को चाहने वाले ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य का आचरण करते हैं, उस परमपद् को मैं (कृष्ण) तेरे (अर्जुन) के लिए संक्षेप में कहूँगा।

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदिनिरूध्य च।
मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणामास्थितो योगधारणाम्॥
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्यावहरन्मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्॥

अर्थात् सब इन्द्रियों के द्वारों को रोक कर तथा मन को हृदय में स्थिर करके फिर उस जीते हुए मन के द्वारा प्राण को मस्तक में स्थापित करके, परमात्मा सम्बन्धी योग धारण में स्थित होकर जो पुरुष 'ओ३म्' उस एक अक्षररूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थ स्वरूप मुझ निर्गुण ब्रह्म का चिन्तन करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है, वह पुरुष परमगति को प्राप्त होता है।

अस्तु! इस 'ओ३म्' शब्द के दर्शन को समझते हुए आइए प्राणायाम के रूप में भी पूरी सांस भरते हुए इसका उच्चारण कर अपने को अहोभागी समझें। और कोई मन्त्र-चाहे प्रणव (गायत्री) मंन्त्र हो या कोई अन्य-याद रहे या न रहे, सृष्टिकर्ता का यह एक अद्वितीय नाम 'ओ३म्' तो अवश्य याद रहेगा। इसी पर उठते-बैठते अपना ध्यान केन्द्रित रखें

अन्त में इन पंक्तियों को गुनगुनाते हुए मैं इस लेख की इति करना चाहूँगा:

ओ३म् है जीवन हमारा, ओ३म् प्राणाधार है।
ओ३म् है कर्ता विधाता, ओ३म् पालनहार है।

- ए-1055, सुशान्त लोक-1, गुरुग्राम-122009

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 11,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

The Land Of Swami Dayanand Known as TANKARA

❒ Sh. S.K. Dua

If I were to say that I visited Tankara for 27 times, during the past two decades (1994 – 2013) possibly, few people may believe. And, if I said that I visited Tankara for 23 times, during the period 2001- 2006, hardly, few people might beleive. But, it is true. The fact is, that during that period, *"Tankara Trust"*, had assigned me certain time bound projects and programs at Tankara, for which my repeated visits to the place had become inevitable. My last visit to the city was on the *Rishibodhutsav*, in March 2013,

Every time I landed up in Tankara, my heart would be filled up with great enthusiasm, joy and pride to think that I was stepping on the land, which was once treaded by my beloved *Rishi, DEV DAYANAND, as a* child *Mool Shankar* and played on the open grounds and lanes, of this village, about two centuries ago.

The town, called "Tankara"

Tankara, a hamlet, located on the western bank of the *DEMI NADI, a rainy season rivulet only (like most of the rivers in Saurashtra),* and on the main Rajkot – Morbi highway, around 40 Kms, from Rajkot, was a sleepy town, which had a population of around 20,000 or so, in the late eighties. Suddenly, it became active and alert during mid nineties. The quest for higher education and better living standards, offered a base for the rural masses a great change in lifestyles and general behavior of its people. With the advent of the information technology and its usefulness to the public at large being felt all around, how could Tankara remain untouched, from its effects? The *gram- panchayat* also became more active in improving the physical condition of the village. The kutcha- pucca roads in the village were concreted. The open-surface side drains were cemented. The dark lanes were replaced with bright electric lamps.

In improving the over all socio-economic condition of the town, the *Tankara Trust* also did not lag behind. It played a very prominent part in building several structures, both inside and outside its precincts at its own cost, e.g. the massive, 30 ft. high, R.C.C. structure, with stone cladding-entrance gate for Tankara, named as, the *"Mahariishi Dayanand Dwar"*, over looking the Rajkot-Morbi highway, built by the Trust from its resources, provides a special identity to the Village in the area and has become as its famous landmark. Repairs and remodeling of the *Dayanand Ghat,* on the western bank of the *Demi* river and a provision of a toilet block for the public use, near the Ghat. A beautiful and colorful public fountain near the main bus stop of the town, and a children park," *Dayanand Vatika*", near the historical *Rishibodh-Mandir*, for amusement of the children, are some of the other schemes, which were planned and executed by the Trust, for the benefit of the local public. Tankara town felt more proud when the Trust built the first four-storied residential block in its premises, in the year 2003, the first high rise building in the town, But, the village was not like this during the childhood days of *Mool Shankara*. It is said that Tankara had only two classes of working men, in olden times. One, the Scholars, and the other class was that of the Goldsmiths, Authors have written that these Goldsmiths were famous for their craftsmanship and intricate / fine jewelry work, through out the state of Gujrat and the former Bombay State, now part of Maharashtra. In order to improve their socio-economic conditions, these families migrated to various parts of the country and abroad.

With more and more development of business houses and small scale industrial set-ups coming its way in this area, the population of the town was bound to swell and now it stands at around 40,000 plus . All these factors contributed to the elevation of the village town of Tankara to that of a ***Taluka*** *(Tehsil)*, under the district of Rajkot, a few years back. New business-houses, show-rooms and small scale industries, are all coming up on this belt. A few kilometers up on the highway, are the two famous electronic wall clocks and telephone- instruments manufacturing Companies, named **"Samay" and "Orpat"**,, Recently a new unit by the name, "***Dayanand Poly Plast***" having a fully automatic plant, has come up within the Tankara city limits, which manufactures PP / HDPP woven sacks / bags and caters for the Sugar Industries in the northern and western parts of India..

The " Tankara Trust"

The affairs of the *"Tankara Trust"* are managed by a "Board of Trustees". The Trustees are the persons of very high repute, who are widely known, acknowledged and accredited for their expertise in the social and public service fields at their respective places of work / stay and volunteer to render their help in running of the Trust, effectively and efficiently. Besides its own permanent strength of Trustees, there is also a provision in the rules, to co-opt a certain number of highly placed

persons of all India fame and eminence, to its fold, like the "President of the DAV Colleges Managing Committee" and like wise positions. The Trust conducts its annual special meeting of its Trustees, on the day next to the *Rishi-Bodh Utsav*, every year. Besides approving the plan of action for the next year, its Annual Budget for the next financial year, the Annual report of the Trust, prepared by its Secretary for the current year and the Annual Audited Accounts for the previous year, are also considered and approved by the Trustees.

The entire expenditure on running of the two "***Vidyalyas***"(Educational Institutions), the Gaushala, the vast campus of the Trust and the 3-4 days' gathering at ***Shivratri Parva***, is incurred by the Trust, alone. The source of income to the Trust is by way of : ❑ Donations, received from the visitors / devotees, coming to Tankara for the Utsav, ❑ Donations, received through various religious / Social Institutions and Trusts; ❑ Donations, from individuals, through the organized channels of the Trust, and ❑ Donations, received from numerous Arya Samajs, spread all over the Country..

The Trust is running two educational Institutions (for boys only) within its precincts at Tankara, under the name of ***"Updeshak Vidyalya"*** , to impart free education to its students up to post graduation level. The intake level for both the wings is 7^{th} class pass. One of the *Vidyalyas,* caters for the course, as per the prescribed curriculum of "***Maharishi Dayanand University", Rohtak (Haryana),*** to which it is affiliated, Under this scheme of study, the students, from the entry level and through till M. A., are taught, in addition to the prescribed syllabus of the University,, ***"Sanskrit-Vyakarana", "Vedas", "Darshan-Shastra", "Upnishadas"*** **and other ancient books of knowledge**. Students do not incur any expenses on their studies, including boarding and lodging or incidentals, as these expenses are borne by the Trust. The other wing of the *Vidyalya*, turns out only ***"Updeshaks / Pracharaks"*** **(Preachers), and *"Bhajneeks"*,** who tread different places, **and spread the message of *Arya Samaj, Dayanand and Vedic Dharm*..**

The credit for turning these young boys into good and educated citizens of the country goes to its teaching faculty, (headed by its *Aacharya*, Shri Ram Dev ji Shastri),

In addition to the above, the Trust also manages a huge ***"Gaushala"***, having a total of around 40 cows and 40-45, calves. The milk procured from the cows is served to the students at the "*Vidyalya*", only, but the quantum of milk obtained from the *Gaushala* stands no comparison to its need of the inmates..

There is also a centre for training of women in tailoring and handicrafts, run in its premises by the Trust, under the name of ***"Shri Onkar Nath Mahila Silai Prashikshan Kendra"***. The centre, which was opened mainly for the benefit of the poor and destitute women, to get trained and earn their livelihood and be independent in their lives, has now assumed great popularity and recognition Many young girls and house-wives come to the Kendra to get trained and later on, make this as their career. **The *Kendra* has since received recognition from the Government of Gujrat and all certificates / Degrees are awarded to the pass-outs, by Govt.** The Trust also has to its credit, the publication of a monthly news magazine, called the ***"Tankara Samachar"***. its issues sent by post against subscribed either by way of life-membership, or annual subscription fee. The receipt, screening or scrutinizing of articles, write-ups, poems and advertisements etc, and so also, its publication and dispatch of the copies to the subscribers, are organized and controlled by a youngTrustee of the Tankara Trust, The middle- aged editor, performs all the functions every month,, besides discharging his official duties, Manager in PSU Bank. The one page editorial, inserted by him in every issue, is more often than not, turns into a mind blowing topic. The magazine, published from New Delhi, has always received great admiration at the hands of the readers, for its paper quality, glossiness, page-lay-outs and print quality..

The Palace

The entire Trust Compound, the so called ***Parisar,*** once, belonged to the king of Morbi, who had built this palace as his resting or hunting abode, outside Morbi. The compound, with an area of around 4.30 acres of land, has a huge newly built ***"YAGYASHALA"***, houses two old structures of the Raja's times, called, the ***Raja-vas*** and the ***Rani-vas*** and also many new multi-storied structures for use as hostels for students and residences of teachers etc. Flats for use of visitors/ guests are also located in this *"parisar"*. It is learnt that **Shri Mehar Chand Mahajan ji, the first Indian Chief Justice of Supreme Court of India and also the founder Trustee of the SMDSST**, had purchased this ***Mahalaya*** from the Morbi Raja, in 1957, for the Trust, at a very nominal price. In this honorees task, he was also helped by an Industrialist from Porbandar ,(Gujrat), ***shri Nanjibhai Kalidasbhai Mehta*** *and also* ***Shaarda ji*** of Ajmer (Rajasthan).

The Birth Place, where Dayanand was born

The house, where **Mool Shankar (Swami Dayanand)** was born in Tankara, was in the possession of his extended family members. Although, some of the adjoining houses had already been procured and were in the possession of the Trust, but the particular room, where he (Mool Shankara) was born,, was held by the family

(Cont. Page 18)

स्वाधीनता के मायने

❒ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

स्वाधीनता शब्द के अर्थ के अनर्थ से एवं इसके दुरुपयोग से वर्तमान समय में हमारे देश में बहुत सी समस्याएं पैदा हो रही हैं । हम स्वतंत्र देश के नागरिक यह समझते हैं कि हम जो चाहें जब चाहें जैसे चाहें करने के लिए स्वतंत्र है और हमें कोई भी रोक नहीं सकता । आज इस देश का नागरिक स्वतंत्रता के इसी अर्थ के अनर्थ के कारण अपनी भौतिक प्रगति को लेकर अपने लाभ के लिए स्वार्थ के वशीभूत होकर अपने अधिकारों के प्रति अत्यंत सजग है लेकिन कर्तव्यों के प्रति पूर्णतया उदासीन है । हम समझते हैं कि स्वाधीनता हमें हर प्रकार के नियमों कायदे कानूनों के बंधन से मुक्त करती है । व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय नियमों कानूनों के बंधन से मुक्ति का भाव और केवल स्वयं के भौतिक सुखों की प्राप्ति की तीव्र इच्छा के वशीभूत आज इस देश का नागरिक हर प्रकार का अनाचार कर रहा है और इससे भी बढ़कर यह कि अपने इस अनाचार को वह अपना अधिकार मानकर अपनी स्वाधीनता की दुहाई देता है । इसीलिए आज इस देश का नागरिक व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर अधोगति की ओर फिसल रहा है । अन्यथा एक राष्ट्र की आयु के संदर्भ में 60-62 वर्ष की आयु मात्र बाल्यावस्था मानी जाती है और अपनी इतनी कम आयु में राष्ट्र का इतनी व्याधियों से ग्रस्त हो जाना इसी बात का द्योतक है कि राष्ट्र की तथाकथित विकास की दिशा और दशा ठीक नहीं है। राष्ट्र के नागरिक अधिकारों के प्रति उग्र लेकिन कर्तव्यों के प्रति पूर्णतया उदासीन है और इसे स्वाधीनता के दायरे में रखते हैं ।

दरअसल स्वाधीनता के मायने क्या है इसे समझे बिना हम समस्याओं का इलाज नहीं कर सकते । जिस प्रकार कोई डाक्टर बिना बीमारी की मूल जड़ को जाने उसका इलाज नहीं कर सकता । पार्णिनी अष्टाघ्यायी के सूत्र **स्वतंत्रः कर्ता** 1/4/54 के अनुसार मनुष्य किसी कार्य को करने, ना करने वा अन्यथा करने के लिए स्वतंत्र हैं परन्तु स्वतंत्र कौन है जिसकी इन्द्रियां, मन, बुद्धि, प्राण, अन्तःकरण उसके आधीन हैं । इसे एक आसान उदाहरण से समझते हैं जिस प्रकार किसी वाहन का चालक केवल तभी तक दुर्घटना से बचा रह सकता है जब तक वह ना केवल वाहन को अपने आधीन रखता है तथा यातायात के नियमों के अनुसार चलाता है और यदि चालक शराब के नशे में या तीव्र गति के रोमांच के कारण वाहन पर नियंत्रण खो बैठता है और नियमों को तोड़ता है तो दुर्घटना अवश्यंभावी है । ठीक उसी प्रकार जब मनुष्य का साधन अर्थात इन्द्रियां, मन, बुद्धि आदि उसके आधीन होती है और वह सामाजिक राष्ट्रीय नियमों कानूनों का पालन करता है तभी तक मनुष्य की जीवन यात्रा कुशलतापूर्वक चलती है। और यदि उलटा हो गया और मनष्य अपने साधनों के आधीन हो गया अर्थात मन बुद्धि इन्द्रियों पर उसका नियंत्रण नहीं रहा और वह भौतिक सुखों की चाह में मन इन्द्रियों का दास बनकर सामाजिक राष्ट्रीय नियमों कानूनों को तोड़ने लगा तो निश्चित रूप से अपनी स्वयं की जीवन यात्रा को तो अधोगति की ओर ले जायेगा अपितु समाज राष्ट्र में भी लूट, डकैती, चोरी, भ्रष्टाचार, भूख, गरीबी जैसी बीमारियों को जन्म देगा।

मनमानी से गर चलो , तो तुम मन के दास ।
भोगोगे फिर दंड यहां , होकर खिन्न उदास ।।

अथर्ववेद में **अश्वस्य वारो गोशपद्यके ।** 20/129/18 द्वारा वेद भगवान ने मनुष्य को संदेश दिया हे आत्मन् ! तू घुड़सवार होकर घोड़े के खुरों में कुट पिट रहा है । वेद में मनुष्य को स्वयं को पहचान कर इन्द्रियों की विज़य वासना में फंसकर मन का दास बनकर रह रहा है। मनुष्य इन्द्रियों रूपी घोड़ों की सवारी करके रईस बनने के स्थान पर उन घोड़ों की सेवा करने वाला सईस बन चुका है। फिर मन इन्द्रियों का दास उलटे अपने साधनों के आधीन रहने वाला मनुष्य स्वाधीन कैसे कहला सकता है वह तो उलटे अपने ही साधनों के आधीन हो गया। सामवेद में भी **अहं गोपतिः स्याम्**। 18/35 कहकर मनुष्य को इन्द्रियों रूपी गौओं का स्वामी बनने का आदेश दिया। यह ठीक है कि अत्यंत गतिशील मन एवं चंचल इन्द्रियों को बस में करना दुष्कर कार्य है परन्तु मनुष्य यदि इनका स्वामी बनकर रईस घुड़सवार बनना चाहता है तो अभ्यास वैराग्य द्वारा इन्हें बस में करना चाहिये। हमें सभी साधनों विशेष रूप से मन बुद्धि इन्द्रियों को अपने आधीन करके अर्थात सही अर्थों में स्वाधीन होकर सामाजिक, राष्ट्रीय नियमों का पालन करते हुए कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए। कर्तव्य पालन के समय अधिकार स्वतः प्राप्त होते हैं। बिना कर्तव्य जाने अधिकार मांगना अनुचित है। पराधीन सपनेहुं सुख नाहिं और साधन आधीन तो पराधीनता से भी अधिक कष्टदायक है। यजुर्वेद में भी **अदीनाः स्याम शरदः शतम् ।** यजु. 36/24 द्वारा सौ वर्षों तक जीवन पर्यन्त अदीन, स्वाधीन रहकर जीवन की बात कही गई है ।

इसलिए मनुष्य से यह अपेक्षित है कि वह स्वाधीनता के सही अर्थ को समझ मन बुद्धि इन्द्रियों को बस में करके उनका स्वामी बन अपने सामाजिक, राष्ट्रीय दायित्वों, कर्तव्यों का पालन करता हुआ भौतिक प्रगति, आघ्यात्मिक उन्नति और मानसिक शांति के पथ पर चले। ऐसा स्वाधीन नागरिक सामाजिक नियमों वेद अनुकूल धर्म मार्ग पर चलता हुआ व्यक्तिगत, संविधान का पालन करता हुआ व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्रगति में सहायक सिद्ध होवे ।

502 जी एच 27, सैक्टर 20 पंचकूला, मो. 09467608686

पुरस्कार प्राप्त करो

सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो। प्रकाशित होने के एक मास तक सही उत्तर देने वाले को रोचक ज्ञान वर्धक पुस्तक भेजी जाएगी।

प्रश्नावली:- ❑ भूत प्रेत क्या होते हैं? ❑ कौन से वृक्ष का फल पीसकर जल में डालने से जल शुद्ध हो जाता है? ❑सृष्टि के आदि में किन चार ऋषियों की आत्मा में वेदों का ज्ञान दिया? ❑ बीज पहले उत्पन्न हुआ या वृक्ष? अण्डा पहले हुआ या मुर्गी? ❑ सृष्टि की आयु कितने वर्षों की है? ❑ प्रथम मनुष्य की उत्पत्ति किस स्थान पर हुई? ❑ दाढ़ी मूछ रखनी चाहिए या नहीं? ❑ अगर तगर और जायफल जावत्री में क्या अन्तर है? ❑ क्या ईश्वर भूत, भविष्य वर्तमान तीनों कालों को जानता है? ❑ मोक्ष (मुक्ति) की अवधि कितनी होती है? भेजने का पता- देवराज आर्य मित्र, डब्ल्यू जेड-428, हरि नगर, नई दिल्ली-110064

યજ્ઞીય ઔષધિઓના ગુણોનું વિવેચન

સંકલનઃ- રમેશ ચન્દ્ર મહેતા email:- rammehta@gmail.com

ઘણા આર્ય પરિવારોમાં અને આર્યસંસ્થાઓમાં સવાર-સાંજ અથવા તો દિવસમાં એક વખત અગ્નિહોત્ર નિયમ પૂર્વક થાય છે. શ્રદ્ધાપૂર્વક આહુતિઓ આપવામાં આવે છે. હવનસામગ્રી મોટેભાગે આર્યસમાજોમાંથી અથવા દુકાનોમાંથી તૈયાર લાવીને હોમવામાં આવે છે. કારણ કે સાધારાણ લોકોને આર્યસંસ્થાઓ ઉપર વિશ્વાસ હોય છે કે ત્યાંથી મળતી સામગ્રી સારી જ હશે.

પણ ના, સંસ્થાઓ પણ જાતે તો હવનસામગ્રી નથી બનાવતી. હવન સામગ્રી બનાવનારા વ્યવસાયિકો પાસેથી હવન સામગી મંગાવવામાં આવતી હોય છે. વ્યવસાયિકો પણ પોતાના નફાનું ધ્યાન રાખતા હોય છે. અત્યારે સંસ્થાઓમાં પચાસથી લઈને લગભગ એકસો રુપિયે કિલોની સામગ્રી મળે છે.

જ્યારે અગ્નિહોત્રનો અપેક્ષિત લાભ તો મળતો જ નથી. પ્રયત્ન એવો હોવો જોઈએ કે બને ત્યાં સુધી ગાંધીને ત્યાંથી વનસ્પતિ લાવીને જાતે જ હવન સામગ્રી તૈયાર કરવી જોઈએ. હવન સામગ્રીમાં પ્રયોજાતિ વનસ્પતિઓના ગુણ-ધર્મનું વિવેચન કરવાનો અહીં પ્રયાસ છે

– આશા છે શ્રદ્ધાળુઓ લાભ ઉટાવશે

છરીલા	શીતળ, હલ્કી, કફ, પિત્ત, ખુજલી, કોઢ, દાહ, રક્તાર્શ નાશક તથા હૃદય માટે હિતકારી છે.	તગર	ગરમ, વિષરોગ, હેડકી, શૂળ, આંખના રોગ, વાત-પિત્ત-કફ નાશક છે.
તાલીસ પત્ર	ગરમ, શ્વાસ, કાસ, કફ, વાત, અરુચિ, ગુલ્મ, મંદાગ્નિ, ક્ષયહારી છે.	કેસર	વર્ણકારક, શિરોરોગ, વ્રણ, કૃમિ, વમન, વ્યંગ તથા ત્રિદોષ નાશક છે.
લાજવન્તી	શીતળ, કફ, પિત્ત, રક્તપિત્ત, અતિસાર, યોનિદોષ નાશક છે.	ઈન્દ્રજવ	ત્રિદોષ નાશક, ગ્રાહી, શીતળ, જ્વર, અતિસાર, સ્તન, અંશવમન, વિસર્પ, કુષ્ટનાશક, અગ્નિદીપક, વાત-કફ, શૂળ નાશક, છે.
શીતળ ચીની	ગરમ, હૃદયરોગ, કફ, વાત તથા અન્ધતા નાશક છે.	ગૂગ્ગળ	પિત્તકારક, દસ્તાવર, હાડકા સાધનાર, રસાયણ, અગ્નિ પ્રદીપક, બળવર્ધક, કફ-વાત, વ્રાણ, મેદ, પ્રમેહ, કુષ્ટ, આમવાત, ગાંઠ, શોથ, અર્શ-ગંડમાલા, કૃમિરોગ નાશક અને ત્રિદોષ શામક છે.
કપૂર	શીતળ, વીર્યવર્ધક, આંખો માટે હિતકારી, સુગન્ધિત, કફ-પિત્ત, વિષનાશક, તૃષા, મેદ અને દુર્ગન્ધનાશક છે.	કસ્તૂરી	ગરમ, વીર્ય વર્ધક, કફ-વાત, વિષ, શોધ, વમન તથા દુર્ગન્ધ નાશક છે
દેવદારુ	ગરમ, વિવન્ધ, શોથ, તન્દ્રા, હિચકી, જ્વર, લોહીના વિકાર, પ્રમેહ, પીનસ, ખાંસી, વાત-પિત્ત નાશક છે.	પીળું ચન્દન	શીતળ, શોષ, વિષ, કફ, તરસ, પિત્તદાહ, અને લોહીના વિકાર નાશક છે.
ગળો	રસાયણ, શીતળ, બલદાયક, અગ્નિવર્ધક, વાત-પિત્ત, કફ, આમ, તૃષા, દાહ, પ્રમેહ, કમળો, કોઢ, વાત-રક્ત, જ્વર, કૃમિ, વમન, શ્વાસ, અર્શ, મૂત્રદોષ નાશક છે.	જાવિંત્રી	ગરમ, રુચિકારક, વર્ણ કારક, કફ, તરસ, વમન, શ્વાસ, કૃમિ વિનાશક છે.
અગર	ચામડી માટે હિતકારી, ગરમ, પિત્તકારક, આંખ-કાનના રોગ નાશક, કફ- વિનાશક છે.	જાયફળ	ગરમ, રુચિકારક, અગ્નિ દીપક, કફ-વાત નાશક, શ્વાસ તૃષા, કૃમિ, વિષનાશક છે.
સરસવ	સ્નિગ્ધ, ગરમ, કફ, વાત નાશક, રક્ત-પિત્ત નાશક અને અગ્નિવર્ધક તેમજ કોઢ, ખુજલી, કૃમિ નાશક છે.	પુષ્કરમૂળ	વાત, કફ જ્વર નાશક, શોથ, અરુચિ, શ્વાસ તથા પાંસળી શૂળ નાશક છે.

समाचार दर्पण

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, समावर्तन संस्कार सम्पन्न

टंकारा स्थित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय के शास्त्री तृतीय वर्ष 2012-13 के ब्रह्मचारियों का समावर्तन संस्कार टंकारा ट्रस्ट परिसर में स्थित भव्य यज्ञशाला में सम्पन्न हुआ। उपदेशक विद्यालय के आचार्य रामदेव जी द्वारा यह संस्कार सम्पन्न हुआ। इसी उपलक्ष्य में तृतीय वर्ष के ब्रह्मचारियों ने अपने गुरु श्री रामदेव जी को सम्मान स्वरूप कटिवस्त्र, दौशाला आदि उपहार देकर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस भावुक अवसर पर कुछ ब्रह्मचारियों की आंखों से अश्रुधारा बह रही थी। अपने बाल्य काल से युवा अवस्था बिताए अपने दिनों की भावपूर्ण स्मृतियों का ध्यान कर रहे थे। गुरुकुल अपने घर जैसा ही हो जाता है। अपने माता पिता से अधिक गुरु और आचार्य के सम्पर्क में रहना होता है, इस कारण यह भावुक होने का अवसर ही होता है। इस अवसर पर सभी ब्रह्मचारियों ने शपथ ली कि जहां भी इस भूमण्डल पर रहेंगे, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से वैदिक मान्यताओं के प्रचार प्रसार में संलग्न रहेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के शास्त्री अन्तिम वर्ष के ब्रह्मचारी विजय सिंह शास्त्री द्वारा रचित कविता

तर्जः- तुम मुझे भूला ना पाओगे.......

हम तुम्हें यूँ भूला ना पायेंगे हाँ......
जब बुलाओगे कभी भी पास हमें
हर वो जर्रा हम तोड आयेंगे।
गुरुजनों के ये उपकार सभी हाँ......
भूल जाने हैं ये दुष्वार सभी
ये हैं मोती बीच सागर के
बीच डूबेंगे तो ही पाओगे हाँ......
जब भी सोचेंगे हम टंकारा की

याद आएगी बिछड़े यारों की
तब सहारा ही होता यादों का
अश्क आखों से बहे जाएंगे हाँ......
जीवन के किसी भी दौर में जो कभी
या हो मुश्किल का दौर भी जो कभी
जब बुलाओगे अपने पास हमें
नींद सोई से जाग आएंगे हाँ......

आर्य समाज द्वारा अन्न वितरण

आर्य समाज सुजानगढ़ चेरिटेबल ट्रस्ट सुजानगढ़ (जिला-चुरु-राज.) के तत्वावधान में विगत 32 वर्षों से अनेक लोक कल्याणकारी योजनाएं ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी भामाशाह महात्मा वानप्रस्थ सत्यनारायण जी आर्य (कुलपति, गुरुकुल, हरिपुर, उड़ीसा) की प्रेरणा से सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई है। जन कल्याणकारी योजनाओं में पोलियोग्रस्त लोगों के ऑपरेशन, मोतियाबिंद के ऑपरेशन, बवासीर का उपचार। निर्धन, विधवा, विकलांग लोगों को पेंशन तथा अन्न, वस्त्र, जूते, तिपहिया साईकल आदि दिलवाकर उनकी सेवा की। इतना ही नहीं पशु-पक्षियों के लिए कबूतरखाने, पानी की खोलियां, पानी की प्याऊ, पानी के ऑवरहेड टेंक, विश्रामघर, संस्थानों के द्वार, भवन आदि बनवायें गये निर्धन वेघर लोगों के लिए मकान बनवाये। अनेक यज्ञशालाएं, पर्यावरण शुद्धि हेतु हजारों वृक्षारोपण तथा वृक्षों के गट्टे बनवाये गये।

गो सेवा सदन का उद्घाटन

आर्य समाज टनकपुर के तत्वावधान में आर्य समाज गो सेवा सदन का उद्घाटन यज्ञ हवन के साथ संसदीय सचिव वन एवं पर्यावरण संसदीय सचिव वन एवं पर्यावरण मन्त्री श्री हेमेश खर्कवाल जी ने किया। इस पुण्य अवसर पर स्वामी सन्ध्यागिरि काला झाला आश्रम, कृष्ण गोपाल मेहरोत्ता, दिनेश चन्द्र शास्त्री, सामश्रवा आर्य, रामदेव आर्य, रामसिंह आर्य, राजीव आर्य आदि ने अपने विचार रखे तथा गोरक्षा, गोपालन, रक्षण, संवर्धन पर प्रकाश डाला और गो सेवा सदन चलाने का संकल्प लिया। मुख्य अतिथि उत्तराखण्ड सरकार में मन्त्री श्री हेमेश खर्कवाल ने गो सेवा सदन को सहयोग करने का वचन दिया।

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा www.tankara.com पर उपलब्ध है

आर्य समाज स्थापना दिवस

''वेदो की और लौटो'' का नारा देते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों की ऋचाओं का सही चित्रण किया था। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी की ऋषि ने योगिराज कृष्ण की तरह वैदिक विचारो की बांसुरी बजाई थी। गाँधीजी से भी पहले स्वामी दयानन्द ने ही स्वराज्य, स्वदेश व स्वतंत्रता का नारा दिया था। यह विचार मुख्य अतिथि के रूप में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए डॉ. नंदिता सिंघवी, संस्कृत विभागाध्यक्ष राजकीय डूँगर महाविद्यालय बीकानेर ने आर्य समाज स्थापना दिवस और नव संवत्सर कार्यक्रम में **महर्षि दयानन्द मार्ग स्थित आर्य समाज** में आयोजित कार्यक्रम में कहे।

❑❑❑

अलवर की तीनों आर्यसमाजों ने संयुक्त रूप से नव सम्वत्सर पर्व एवं आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ आर्य समाज बजाजा बाजार, अलवर में मनाया। समारोह की अध्यक्षता जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति ने की एवं विशिष्ट अतिथि प्रदीप आर्य, चेयरमैन यू.आई.टी. थे। समारोह के प्रारम्भ में यज्ञ किया गया। समारोह में प्रवचन देते हुए अमरमुनि, प्रदेश महामन्त्री ने कहा कि प्रलय के बाद ईश्वर ने चैत सुदी एकान्त के दिन सृष्टि की रचना की। धर्मसिंह आर्य ने बताया कि महर्षि दयानन्द ने इसी दिन बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी।

❑❑❑

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर **गुरुकुल हरिपुर जुनवानी, जिला नुआपड़ा (ओड़िशा)** में उल्लासमय वातावरण में नूतन वर्ष का पालन किया गया। सर्वप्रथम आचार्य दिलीप कुमार जिज्ञासु के ब्रह्मत्व में बृहद्यज्ञ पूर्वक कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। जिसमें ओडिशा एवं छत्तीसगढ़ के विभिन्न ग्रामों से पधारे हुए धर्मानुरागी सज्जनों ने नई प्रेरणा, नया उत्साह की प्राप्ति के लिए यज्ञ में आहुति प्रदानकर नववर्ष का आह्वान किया। यज्ञोपरान्त गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन देव जी आचार्य का नूतनवर्ष एवं विभिन्न सैद्धान्तिक विषयों पर सारगर्भित उपदेश हुआ।

युवकों की प्रेरणास्त्रोत माँ दिवंगत

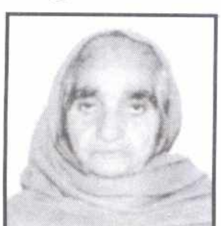

आर्यसमाज भीम नगर गुड़गांव से सम्बन्धित आर्य नेता श्री रामचन्द्र आर्य ट्रस्ट मन्त्री जी रामनाथ सहगल जी के परम मित्र जी की धर्मपत्नी श्रीमती रामप्यारी जी का दिनांक 12 अप्रैल 2013 को 82 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। वे अपने पीछे एक भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। उन्होंने मरणोपरान्त अपनी आंखे दान करके नि:स्वार्थ परोपकारी जीवन का परिचय दिया। पूज्य माता जी ने आर्य समाज की संरक्षिका रहकर सेवा की। दान एकत्रित करना समाज की उन्नति के लिए तत्पर रहना उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य था। दैनिक जीवन में सन्ध्या, गायत्री पाठ करना नहीं भूलती थी। यज्ञ में उन्हें विशेष रूचि थी। वैदिक सिद्धान्तों और ऋषि सिद्धान्तों के प्रति आस्था थी। स्वर्गीय माता जी ने सम्पूर्ण परिवार में वैदिक संस्कारों का सफलतापूर्वक बीज वपन किया। टंकारा परिवार के सभी जन परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सैक्टर 7 रोहिणी का 22वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक यजुर्वेदीय पारायण ग्यारह कुण्डीय महायज्ञों के साथ आयोजित हुआ। जिसके ब्रह्मा-आचार्य उषबुध जी (सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान एवं उपाचार्य-रामकिशोर शास्त्री थे। जिसमें प्रात: सायं यजुर्वेद पारायण महायज्ञ वेद कथा, भक्ति संगीत, आर्य महिला सम्मेलन, बाल पोशाक प्रतियोगिता, युवा विचार गोष्ठी एवं वरिष्ठ आर्यजनो का सम्मान समारोह तथा वेद सम्मेलन आदि विभिन्न कार्यक्रम किये गये, जिसकी अध्यक्षता श्री सुखदेव आर्य तपस्वी ल द्वारा की। 20 वरिष्ठ आर्य जनों (परिवारों) को सम्मान किया गया।

❑❑❑

आर्य समाज कटनी (म.प्र.) 49वां वार्षिकोत्सव होशंगाबाद गुरुकुल से पधारे स्वामी ऋतस्पति जी परिब्राजक की अध्यक्षता में एवं दिल्ली से पधारे भजनोपदेशक श्री श्यामवीर जी राघव एवं जबलपुर के विद्वान आचार्य श्री धीरेन्द्र जी पाण्डेय के प्रवचनों से सोल्लास संपन्न हुआ। प्रथम दिन का कार्यक्रम बरही नगर में वहीं के संभ्रांत व्यक्ति श्री विजय कुमार अग्रवाल जी के संयोजन में तथा दूसरे व तीसरे दिन का कार्यक्रम आर्य समाज मंदिर प्रांगण में रखा गया। कार्यक्रम का संचालन श्री मृत्युंजय मिश्र जी के द्वारा किया गया। अंत में समाज के प्रधान श्री अश्विनी सहगल जी के निर्देशन में समाज के निम्नलिखित व्यक्तियों को उनके विशिष्ट योगदान पर उन्हें बाहर से पधारे अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया।

आर्य समाज, बड़वानी पुन: सक्रिय

'वैदिक संसार' इन्दौर से प्रकाशित मासिक पत्रिका के प्रकाशक द्वारा पत्रिका का प्रथम वार्षिकोत्सव अपनी जन्म भूमि बड़वानी नगर में छ: दिवसीय 'अथर्ववेद पारायण महायज्ञ, योग एवं चिकित्सा परामर्श शिविर' आयोजित कर वैदिक सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार किया गया। वैदिक सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार की वैदिक संसार की तड़प से प्रभावित होने से मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान-श्री दलवीरसिंह जी राघव ने सुखदेव शर्मा को आर्य समाज बड़वानी का प्रभार प्राप्त करने हेतु निर्देशित किया।

वैदिक संसार प्रकाशक सुखदेव शर्मा द्वारा गोविन्दराम आर्य, देपालपुर, जिला-इन्दौर, अध्यक्ष-वेद प्रचार समिति मध्यप्रदेश एवं आर्य समाज कुँआ, जिला-बड़वानी के पदाधिकारियों की उपस्थिति में प्रभार प्राप्त कर आर्य समाज भवन पर वर्षों बाद ओ३म् ध्वज ध्वजारोहण कर यज्ञ किया तथा साप्ताहिक यज्ञ-सत्संग किये जाने का निर्णय लेकर आर्य समाज बड़वानी को पुन: सक्रियता प्रदान की।

51 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न

आर्य कन्या विद्यालय समिति, श्री रामजीलाल आर्य कन्या छात्रावास समिति, अलवर जिले के समस्त आर्य समाज एवं जन सहयोग से पर्यावरण शुद्धि एवं विश्व शांति हेतु 51 कुण्डीय महायज्ञ वैदिक विद्या मन्दिर, अलवर में आयोजित किया गया। यज्ञ स्थल पर प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता ने यज्ञ के ब्रह्मा पंडित हरिप्रसाद व्याकरणाचार्य, एवं श्री अमरमुनिजी का स्वागत किया। उत्साह को देखते हुए अतिरिक्त यज्ञवेदियों की व्यवस्था की गई। यज्ञ में सम्मिलित समस्त यजमानों को सत्यार्थ प्रकाश भेंट की गई। स्वामी प्रणवानन्दजी ने कहा कि हमें जीवन में परोपकारी बनना चाहिए।

30 बातें जहाँ महिलाएं पुरुषों से बेहतर हैं

पुरुष भले ही ये साबित करें कि वे महिलाओं से श्रेष्ठ हैं, लेकिन कई बातों में महिलाएं पुरुषों से कहीं बेहतर हैं और ये हम नहीं कहते, रिसर्च रिपोर्ट्स कहती हैं-

1. महिलाएं रिश्तों के प्रति वफादार और ईमानदार होती हैं, जबकि अक्सर पुरुष इस कसौटी पर खरे नहीं उतरते। एक बार महिलाएं किसी से रिश्ते में बंध गई, तो अपना 100 प्रतिशत देने की कोशिश करती हैं। वे रिश्तों को लेकर बेहद संवेदनशील भी होती हैं।
2. पूरी दुनिया में हुए शोध बताते हैं कि महिलाओं का आईक्यू लेवल पुरुषों की तुलना में कहीं ज्यादा अच्छा होता है।
3. हाईजीन और साफ-सफाई के मामले में भी महिलाएं पुरुषों से आगे हैं। चाहे घर में वॉर्डरोब, बेड या डाइनिंग टेबल की बात हो या ऑफिस डेस्क की। सफाई के मामले में पुरुष महिलाओं से पीछे ही रहते हैं।
4. महिलाएं मल्टीटास्किंग होती हैं। वे एक साथ कई काम कर सकती हैं, खाना बनाना, सफाई, बच्चे का होमवर्क, मोबाइल पर बातें। कई काम एक साथ वे उतने ही परफेक्शन के साथ कर सकती हैं, जबकि पुरुष ऐसा नहीं कर पाते। दरअसल, महिलाओं का मस्तिष्क ज्यादा सक्रिय होता है, जिसकी वजह से वे एक साथ कई कार्य कर पाती हैं।
5. यूके की एक स्टडी के मुताबिक महिलाएं अच्छी ड्राइवर भले ही न हों, पर सुरक्षित ड्राइविंग के मामले में वे पुरुषों से काफी आगे हैं। रिपोर्ट के अनुसार महिलाओं द्वारा होनेवाले एक्सीडेंट की दर पुरुषों के मामलों में बहुत कम है, इसके अलावा ट्रैफिक रूल्स फॉलो करने में भी वे पुरुषों से बेहतर हैं।
6. दर्द झेलने और बोरिंग काम करने की क्षमता भी स्त्रियों में पुरुषों से अधिक होती है। पुरुष घंटों बेमतलब के टीवी कार्यक्रम देख सकते हैं, यूं ही खाली बैठे रह सकते हैं, जबकि स्त्रियां ऐसा नहीं कर सकतीं।
7. चेहरे की भाव-भंगिमा पढ़ने में महिलाएं मास्टर होती हैं। एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी में हुए एक रिसर्च में यह बात सामने आई है। रिसर्च से यह भी पता चला है कि कोई सामाजिक निर्णय लेना हो, तो पुरुष मस्तिष्क को इसके लिए ज्यादा काम करना पड़ता है, जबकि महिलाएं ऐसे निर्णय चुटकियों में ले लेती हैं।
8. महिलाएं लोगों को बेहतर समझ पाती हैं। किसी के व्यक्तित्व, उसके बॉडी लैंग्वेज को वे पुरुषों के मुकाबले बेहतर और जल्दी समझ पाती हैं।
9. रिश्ते जोड़ने में भी महिलाएं माहिर होती हैं। वे लोगों से बहुत जल्दी कनेक्ट हो जाती है और रिश्ते भी जल्दी बना लेती हैं। अपने मन की बात भी वे लोगों से शेयर कर लेती हैं, जबकि पुरुष ऐसा नहीं कर पाते।
10. जॉर्जिया और कोलम्बिया यूनिवर्सिटी की एक स्टडी रिपोर्ट के अनुसार, महिलाएं अच्छी लर्नर होती हैं यानी वे बहुत जल्दी सीख-समझ जाती हैं। रिसर्च के अनुसार वे अलर्ट, फ्लेक्सिबल और ऑर्गनाइज्ड होती हैं और किसी भी टास्क को पुरुषों के मुकाबले जल्दी समझ जाती हैं।
11. महिलाएं फाइनेंस भी पुरुषों से बेहतर ढंग से हैंडल करती हैं। चाहे सेविंग की बात हो, शॉपिंग की या इन्वेस्टमेंट की, महिलाएं पैसे को बहुत अच्छी तरह से मैनेज करती हैं। जबकि पुरुष ऐसा नहीं कर पाते।
12. बच्चों को संभालना, फिर चाहे नवजात शिशु हो या बड़े-बड़े, पुरुषों के वश की बात नहीं, न वे रोते हुए बच्चे को चुप करा पाते हैं, न उसकी डायपर बदल सकते हैं। न उसकी जिद को हैंडल कर सकते हैं और न ही उन्हें बहला-फुसला सकते हैं, जबकि महिलाएं ये काम पूरी जिम्मेदारी व ईमानदारी के साथ करती हैं।
13. महिलाएं पुरुषों की तुलना में ज्यादा स्ट्रांग होती है। अगर उनके हाथ-पैर में कहीं चोट लग जाए, तो वे जानती हैं कि उसे कैसे ठीक किया जाए, जबकि पुरुष छोटी-सी चोट से भी घबरा जाते हैं। हल्का-सा-बुखार भी आ जाएं, तो उन्हें कमजोरी महसूस होने लगती हैं और आराम करने का बहाना मिल जाता है। जबकि महिलाएं बड़ी-बड़ी तकलीफ होने पर भी अपना काम और जिम्मेदारियां उसी तेज और खूबी से निभाती हैं।
14. महिलाएं पुरुषों से बेहतर इसलिए भी हैं, क्योंकि कई कानून खासकर महिलाओं के हितों को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं। उन्हें कई सुविधाएं प्राप्त हैं।
15. महिलाओं की रोगप्रतिरोधक क्षमता भी पुरुषों से मजबूत होती हैं। कनाडा में हुए एक शोध के अनुसार फीमेल सेक्स हार्मोन एस्ट्रोजन महिलाओं की रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और उन्हें इंफेक्शन से लड़ने की बेहतर क्षमता प्रदान करता है।
16. ग्रेजुएशन करने में भी महिलाएं पुरुषों से आगे हैं। डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन के आंकड़ों के अनुसार पुरुष स्नातक की डिग्री लेने में महिलाओं से पीछे हैं, इतना ही नहीं, स्नातक की डिग्री हासिल करने में पुरुषों को 5 वर्ष से अधिक समय लगता है, जबकि महिलाएं 5 वर्षों में ही स्नातक की डिग्री हासिल कर लेती है।
17. महिलाएं पुरुषों की तुलना में हेल्दी डायट लेती हैं। पुरुष जहां दिनभर उल-जुलूल खाते हैं, ड्रिंग व स्मोकिंग करते हैं, वहीं महिलाएं हेल्दी फूड पसन्द करती हैं। महिलाओं के बैग में आपको सलाद, फ्रूट, ड्रायफ्रूट्स, बिस्किट जैसी हेल्दी ऑप्शन मिल जाएंगे, जबकि पुरुषों के बैग से ये सब मिसिंग होते हैं।
18. महिलाएं पुरुषों की तुलना में 5 से 10 वर्ष अधिक होती हैं यानी आयु के मामले में भी बाजी महिलाओं ने ही मारी है। इतना ही नहीं, महिलाएं पुरुषों के मुकाबले बेहतर जीवन जीती हैं यानी जीवन को ज्यादा एंजॉय करती हैं।
19. पुरुषों के मुकाबले महिलाएं स्टाफ को ज्यादा बेहतर ढंग से हैंडल कर पाती हैं।
20. महिलाएं अनुशासित और समय की पाबंद होती हैं। लेटलतीफी उन्हें पसन्द नहीं।
21. महिला लीडर्स सहायता के लिए हमेशा उपलब्ध होती हैं और किसी प्रॉब्लम की स्थिति में जल्दी रिस्पॉण्ड भी करती हैं।
22. पर्सनल ग्रूमिंग के मामले में भी वे पुरुषों से बेहतर हैं। हम उनके अपीयरेंस, उनके मेकअप, ड्रेस की बात नहीं कर रहे हैं, बल्कि

महिला दर्पण

पर्सनल हाइजीन की बात कर रहें हैं। आप महिलाओं और पुरुषों के नाखून देख लें, आप खुद ही समझ जाएंगे कि हम क्या कहना चाहते हैं।

23. महिलाएं समस्याओं को जल्दी भांप लेती हैं और उसका समाधान भी जल्दी निकाल लेती हैं।
24. महिलाओं की कम्यूनिकेशन स्किल भी बेहतर होती हैं। भले ही वे ज्यादा बोलती हों, लेकिन अपने विचारों को खुलकर व्यक्त करती हैं। विवाद-बहस आदि की स्थिति में भी महिलाएं बोलना बंद नहीं करतीं, न ही न सुनने का बहाना बनाती हैं। शोधों से साबित हो चुका है कि महिलाओं का मस्तिष्क कई सारे शब्द, भावनाओं और एहसास को प्रोसेस कर सकता है, जबक पुरुष मस्तिष्क ऐसा नहीं कर सकता।
25. महिलाएं फ्यूचर प्लानिंग व रिलेशनशिप को बेहतर ढंग से मैनेज करती हैं।
26. खतरों को जल्दी भांप लेती हैं और सुरक्षा को लेकर भी ज्यादा सतर्क रहती हैं। कहीं जाना हो तो घर की सुरक्षा, सेफ्टी सिस्टम पर अधिक ध्यान देती हैं।
27. महिलाएं सामने वाले के चरित्र को तुरन्त ही पहचान जाती हैं। उनका सिक्स्थ सैंस इतना स्ट्रांग होता है कि सामनेवाले के मन में क्या चल रहा है, वे देखते ही समझ जाती हैं।
28. महिलाएं जीवन में संतुलन को बेहतर ढंग से मेंटेन करती हैं। महिलाओं के शरीर में सेरोटोनिन का लेवल पुरुषों की तुलना में हाई होता है। सेराटोनिन इमोशन्स को कंट्रोल में रखता है, जिससे महिलाओं को लाइफ को बैलेन्स करने में आसानी होती है।
29. महिलाएं तनाव को पुरुषों के मुकाबले बेहतर ढंग से हैंडल करती हैं। हां, ये सच है कि तनाव व मुश्किल परिस्थिति में महिलाएं जल्दी रो देती हैं, लेकिन एक बार दिल का गुबार आंसू बनकर निकल गया, तो उनकी सोच एकदम स्पष्ट हो जाती हैं और वे एकदम सटीक निर्णय लेने में सक्षम हो जाती हैं। अमेरिका में पुरुष और महिलाओं पर हुए शोध से ये बात सामने आई है कि तनाव दोनों को उतना ही प्रभावित करता है लेकिन तनाव की स्थिति में भी महिलाओं का परफोरमेंस बेहतर था, जबकि पुरुष इसमें चूक गए।
30. महिलाओं की याददाश्त भी पुरुषों से तेज होती हैं। महिलाएं कोई फिल्म देखती है, तो कॉस्ट्यूम, मेकअप, फिल्म के सेट से लेकर हर चीज उन्हें याद रहती हैं। ऐसा इसलिए नहीं कि वे अपीयरेंस पर ज्यादा ध्यान देती हैं, बल्कि उनका इनब्लिट सिस्टम ऐसा होता है कि देखी हुई चीजें उन्हें याद रहती है।

(ऐसे देश, परिस्थिति एवम समाज की भिन्नता में परिणाम अलग हो सकते हैं लेकिन ब्रिटेन और अमेरिका के हुए शोधों से उपरोक्त मान्यताएं बनी है एक विशेष रिपोर्ट से लिए कुछ अंश स.)

आवश्यकता है

महर्षि दयानन्द जन्मभूमि टंकारा में चल रहे महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ऐसे उपाचार्य की आवश्यकता है जो काशिका तथा महाभाष्य एवं निरुक्तादि पढ़ाने में सक्षम हो। योग्यतानुसार वेतन एवं आवास-भोजनादि की सुविधा विद्यालय में दी जाएगी। नीचे लिखे पते पर अपने प्रमाणपत्र, अनुभव तथा पासपोर्ट साईज की फोटो के साथ आवेदन पत्र भेजें।

रामदेव शास्त्री आचार्य, मोबाइल 09913251448
उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, मोरवी, जिला राजकोट, गुजरात-363650

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां प्रतिवर्ष कई वर्षो से पधार रहे हैं यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते है कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। इस वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया हैं कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि घर से जुड़ सकते हैं। इस वर्ष 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है। **सहयोग राशि के साथ अपना नाम, पूरा पता, मोबाइल नम्बर, ई-मेल, व्यवसाय एवम् किस आर्य समाज से संबंधित हैं कि जानकारी अवश्य भेजें। साथ ही आप ऋषि जन्मभूमि को किस प्रकार और सहयोग कर सकते हैं संक्षिप्त में लिखें।**

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	शिवराजवती आर्या उप-प्रधाना	रामनाथ सहगल (मन्त्री)

मधुमेह के मूल में है–'मनमेह'!

'मन सभी प्रवृत्तियों का पुरोगामी है, मन ही प्रधान है, मन से ही सारी प्रवृत्तियाँ होती हैं। यदि कोई दूषित मन से वचन बोलता है या कर्म करता है तो दुःख उसका वैसे ही अनुसरण करता है, जैसे गाड़ी खींचने वाले बैलों के पैरों का चक्का।

मन का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। यहाँ तक कि हमारा सारा संसार ही हमारे मन पर टिका हुआ है। मन के विस्तृत होने के साथ-साथ उसकी गतिशीलता भी हमारे नियंत्रण से बाहर है। वह तीव्र गति से दौड़ता है, उसकी अनन्त शक्तियाँ हैं तथा अनेक संकल्प-विकल्प करता हुआ वह मनुष्य को भटकाने की सामर्थ्य भी रखता है और उसका आत्मोत्थान करने में भी पूर्णतः सक्षम हैं। मन की इन्हीं अनन्त शक्तियों के कारण यजुर्वेद में प्रार्थना की गई है-'**तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु**' अर्थात् मेरा मन शिव संकल्प वाला हो जाये। यह मन जागते हुए भी दूर जाता है, सोते हुए भी यह रूकता नहीं, अपितु चंचल स्वभाव के कारण कहीं न कहीं भागता ही रहता है-

ओ३म् यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

अब देखा जाये तो माया का क्षेत्र व्यक्ति के चित्त की धारा को अपने से ही बाँधे रखता है, जिसके फलस्वरूप वह सदा दुःख-सुख, रोग-शोक के झूले में झूलता हुआ कभी भी शान्त जीवन नहीं बिता पाता और विभिन्न सन्तापों से घिर जाता है। इसलिए हमारे शास्त्रों ने मन को नियंत्रण में रखना, उसे संयमित करना, उसका निग्रह करना मनुष्य की सबसे बड़ी विजय माना है। महर्षि पंतजलि ने योग सूत्र में स्पष्ट कहा है- **'योगः चित्तवृत्ति निराधः'** अर्थात् अपने चित की प्रवृत्तियों का निरोध ही योग है।

हमारे ऋषियों ने भी चित्त का दमन करना श्रेष्ठ कार्य कहा है, क्योंकि उनके अनुसार दमन किया हुआ मन सुखदायक होता है- 'जिसका निग्रह करना कठिन है, जो तरल और बहुत हल्के स्वभाव का है, जो जहाँ चाहे, वहाँ झट चला जाता है, ऐसे चित्त का दमन करना श्रेष्ठ है। दमन किया हुआ चित्त सुखदायक होता है।'

मन अशान्त और दुःखी है तो शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता। मन का तनाव, वेदना, झुँझलाहट, वासना, हताशा आदि कारक अनेक शारीरिक रोगों को उत्पन्न करने में सहायक होते हैं। बाहरी वातावरण से अधिक मन का वातावरण व्यक्ति को रोगी और भोगी बनाता है। कोई भी बाहरी तत्व शरीर को इतनी हानि नहीं पहुँचा सकता, जितना उसका मन अपनी प्रतिक्रिया-शीलता से हानि पहुँचा सकता है। इसलिए कहा गया है-**'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।'** ऋषियों का कहना है कि तप उसे कहते हैं जहाँ चित्त की इच्छाओं का निरोध कर लिया जाये। अपने चित्त पर विजय प्राप्त कर लेना ही मंगलकारी है। जीता हुआ चित्त सदा सुखदायक होता है। हारा हुआ चित्त सदा कष्टप्रद और भारभूत होता है।

वस्तुतः 'त्याग और भोग' के बीच सन्तुलित जीवन ही शारीरिक स्वस्थता का प्रदाता है। यह तभी सम्भव है जब हम मन को अपना मित्र बना लें और मित्रता-पूर्वक अभ्यास और वैराग्य से मन की धारा को अपने हित में प्रयुक्त करें। यजुर्वेद में कहा गया है-

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

भाव यह है कि जिस प्रकार एक कुशल सारथि तीव्र वेग वाले घोड़ों को लगाम द्वारा अपने वश में करता है वैसे ही बुद्धिमान मनुष्य मन को अपने वश में करता है। वर्तमान युग में, आपा-धापी के जीवन में सबसे प्रमुख कारण है-तनाव भरा जीवन। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जब भी मन में भावनात्मक असन्तुलन अर्थात् क्रोध या चिन्ता होगी तो ग्रन्थियाँ स्राव छोड़ना बन्द कर देती हैं। इससे इन्सुलिन पर्याप्त मात्रा में नहीं निकलती। अतः ग्लूकोज की मात्रा रक्त में अधिक होने लगती है। मधुमेह एक ऐसा रोग है जो शरीर में इन्सुलिन नामक हार्मोन की कमी के कारण होता है। इन्सुलिन हार्मोन पेन्क्रियाज़ ग्रन्थि द्वारा उत्पन्न होता है।

कारण एवं लक्षणः- उचित मात्रा में भोजन न करना, असन्तोष व चिन्ता, बहुत भूख लगना, पैरों में जलन अथवा थोड़ा चलने पर पिण्डलियों में दर्द होना, फोड़े-फुन्सियाँ ठीक न होना, यूरिया व क्रिएटीनिन की मात्रा का बढ़ना, श्रम का अभाव या क्षमता से अधिक कार्य करना।

निदानः (1) **भोजन उपचारः- आटा**- समान मात्रा में मिले गेहूँ, जौ व चने को पिसवा लें तथा मसली हुई हरी सब्जियों में गुँथे आटे को प्रयोग में लायें। **फल**- सन्तरा, पपीता, अमरूद, तरबूज, खरबूजा, खट्टे सेब। **चाय**- खाली पेट नहीं, दिन में अधिकतम दो बार, चाय से पहले पानी पीना। **मेवा**- रात की भीगी हुई बादाम की 5-10 गिरियाँ छिलका उतार कर प्रतिदिन लें। **भूख लगने पर**- भूने हुए काले चने, मुरमुरे। **दाल**- मूँग छिलका। **दूध व दही**-टोण्ड मिल्क। **भोजन से पहले**-सलाद लें, जैसे खीरा, ककड़ी, टमाटर, बन्दगोभी, सलाद, पत्ता, धनिया पत्ता, पालक पत्ता, गाजर, मूली आदि। **भोजन करते समय**- टेलीविजन न देखें, बातें न करें। भोजन खूब चबा-चबाकर करें। पानी आधा घण्टे बाद घूँट-घूँट कर पियें। **भोजन के बाद**- वज्रासन में 1 से 5 मिनट तक बैठें। भोजन शीघ्र हजम होगा तथा रूकी हुई वायु का निष्कासन होगा। **ध्यान रहे**- मीठा, मिठाई व तली हुई चीजों का प्रयोग शत-प्रतिशत बन्द कर दें तथा नित्य रात को मेथीदाना पानी में भिगो दें और सुबह उस पानी को पियें।

विचार उपचार- सभी दुःखों व सुखों का कारण हमारे विचार है। हमेशा याद रखें- **'होइहि सोइ जो राम रचि राखा' तथा 'कोई लाख करे चतुराई, करम का लेख मिटे ना भाई'**। हम सब जानते हैं-सबको सब कुछ यहीं छोड़ना है। कभी भी स्वयं को मालिक नहीं मानो, हम सब भगवान् के ट्रस्ट के ट्रस्टी हैं।

तनाव-रहित जीवन- तनाव को सभी बीमारियों की जड़ कहा जाता है। निवारण के निम्न उपाय हैं। - परिस्थितियों के साथ समझौता करें।, जहाँ तक हो सके, घर व दफ्तर के बॉस की हर बात मान लें।, किसी से अपेक्षा न रखें, उपेक्षा होने पर दुःखी न हो।

मन द्वारा उपचार- मधुमेह के उपचार में मन को ठीक रखना बहुत जरूरी है। श्रीमद् भगवदगीता के अनुसार मन ही हमारा मित्र है और मन ही शत्रु। मन को निर्यत्रित करने के दो उपाय हैं।

अभ्यास तथा विरक्ति- मन के नियंत्रण का सबसे सरल उपाय है-महामन्त्र का जप।

दिनचर्या उपचार- प्रतिदिन 40 मिनट की सैर अवश्य करें। सैर के बाद 5 मिनट शवासन में विश्राम करें। - 5 से 20 मिनट नित्य सुबह व सायंकाल कपालभाति तथा अनुलोम-विलोम प्राणायाम करें। - नित्य प्रातः 10 बार मण्डूकासन करें। - नित्य 6 से 8 घण्टे की नींद अवश्य लें। - सप्ताह में एक दिन पूर्ण विश्राम करें। मोबाइल बन्द रखें। मनोरंजन, मौन, मालिश व स्वाध्याय करें।

(Cont. from Page 10)

descendants of the ***Rishi***. Despite repeated efforts made by the Trust, over several years, the family was not agreeable to hand over part of the house, the specific room where he was born, the ***"Janam-Sthan"***, to the Trust at any cost, He was said to be reluctant because of sentimental attachments. It was during the year 1999, that ***Shri Kanjibhai Chakoo,*** the owner of the property of *Dayananda,,* yielded under personal requests of ***Shri Satyanand Munjal ji***, the President / Managing Trustee of the Trust, to part away with the possession of the actual birth-room Now, the Trust has built a double storey huge structure over the place. The ground floor holds the photographic exhibition of the ***DEV DAYANANDA,*** from the time of his birth to his death (***"Nirwan")***, over the display-boards. In the extreme corner end of the hall, is the room, marked as **Janam-Sthan,** enclosed by the glass doors on two sides, so that the visitors are able to have the inside view of the room.

The Famous Rishibodh Mandir (Shiv-Mandir)

A tiny structure (not even 4,5ft.high), is the historical, *Shiv Mandir*, located very close to the *Trust's Gaushala* and the city main bus stop, where the child *Mool Shankara*, awakened his inner conscience and he thought for himself that this idol could not be the Shiva, the protector of the Universe. This awakening, the *BODH*, made *Mool Shankara*, the *Dayanada*, in the coming years,, the great thinker, the philosopher, the reformer and above every thing, the savior of the ***"Hindu Jaati" and Vedic Dharma.***

The Rishibodhotsav Tankara - 2013

Like every year, this year's ***parva***, was also celebrated at Tankara with great devotion fun and enthusiasm. Thousands of *Rishi-Bhaktas* had reached Tankara after covering varying distances,By and large, it was a great festival scene, by the evening of 9th March, at the Trust's compounds.

Keeping in with its tradition, the one week prior of the *Shivratri Parv*, "***Yajur-Ved parayan-Yagya"***, was in performance. Both, at the morning and evening times, The conduct of the Brahma of the Yagya was highly appreciated by all. His explanation of various *kriyas and rituals*, during the performance of the *yagya*, was very well received by all.

The morning ***"Prabhat-Pheris"*** for the three days period, were full of enthusiasm and vigor. Even, the very old men and women were chanting slogans and *bhajans* so loudly and forcefully, as if age had no effect on them. The ***Shobha-Yatra*** on 10th of March, after the flag hoisting ceremony, needs no explanation. It was simply superb.

On the same evening, a special public meeting was held, where certain persons of the public, who had rendered valuable services to the Trust, during the past year(s), were honored and decorated. The chief guest for the function, ***Shri Poonam Suri***, President , DAV Colleges Managing Committee, New Delhi, could not, unfortunately, make it to reach Tankara, due to certain unavoidable reasons. His message was, however, read by Shri S. K. Sharma, the Secretary of the DAV Committee. In appreciation of the good performance of the Tankara Trust, over the past several years, the DAV Colleges Managing Committee was highly considerate and generous to send a cheque for Rs. 5,00,000/-(Rupees five lac only), through Shri S.K. Sharma, as its donation to the Tankara Trust.

The presidential address was delivered by *Shri* ***Yogesh Munjal***, an Industrialist from Delhi and also a Trustee on the Board. Expressing his anguish over the consequent fall in receipts. Exhorting the *Rishi Bhaktas* to show more involvement in the affairs of Tankara, he gave call to a new scheme under which, one person each from every state, should volunteer himself / herself and take a vow to make 1000 new members of Rs.1000- donations per such member for Tankara, from his / her state, during the next year. He further announced that such of the individuals, who achieve this goal, would be publically honoured here from this stage, next year. My memoirs of the *Tankara utsav -2013*, would be half complete if I forgot to mention of the services rendered by a few individuals or a group of persons, who are **behind the screen actors**, like the agency looking after the electricity supply, round the clock, not only inside the campus, but even up to the *Maharishi Dayanand Dwar*, to make the lives of the visitors safe, comfortable and care free.. Similarly, the agencies looking after the work of mike system at all the times, round the clock services of cleanliness of premises, the sanitation and water supply would need a mention. The food, milk and tea responsibility for all the three times in a day being offered by **Dr. V. H. Patel** and his team of around 30 persons (Men and women), who all come from ***Bhuj,*** to discharge this onerous responsibility with great care and pleasure, every year. It is learnt that this team is doing so, for the past around 40 years, which is highly admirable. Managing arrangements to serve the 3 meals a day for thousands of persons in a short span of one hour or so duration, is really a herculean task. Similarly, the services of the ***"Tandoor Party"*** from Delhi, headed by a young man, A big crowd of men and women is always seen surrounding the ***"Tandoor***", at the two-meal- times, desirous of having fresh and hot, straight from *tandoor,,* the***" tandoori-rotis with Dal"***. The team is seen to be serving their guests with a big smile, always. . . All appreciations for the Secretary ***Sh. Ramnath Sehgal a young man of 89 years,*** who cordinate with everyone and make united for only one goal i.e. to make Birth Palace world famous and Prachar of Vedic values, May god bless him. ***(Mob.: 09890661354)***

इस अवसर पर मंचासीन सम्मानित किए गए संन्यासीवृन्द एवं विद्वान, संस्कृत विदुषी/वेद प्रवक्ता डॉ. प्रो. शशि प्रभा कुमार को सम्मानित करते श्री पूनम सूरी जी

(पृष्ठ 2 का शेष)

के महात्मा हंसराज विशेषांकों का विमोचन किया। इस अवसर पर पंजाब विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरूण ग्रोवर और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. स्वतन्त्र कुमार जी को सम्मानित किया गया और डी.ए.वी. विश्वविद्यालय के नवनियुक्त कुलपति डॉ. आर.के. कोहली का स्वागत किया गया।

इस ऐतिहासिक अवसर पर त्यागमूर्ति पांच संन्यासियों (1) स्वामी सुमेधानंदजी (चम्बा), (2) स्वामी यज्ञमुनिजी (मुजफ्फरनगर), (3) स्वामी श्रद्धानंदजी (पलवल), (4) स्वामी सदानन्दजी (दीनानगर), (5) स्वामी शोभानन्दजी (दीनानगर) तथा चार वैदिक विद्वानों (1) डॉ. प्रियव्रत दास (उड़ीसा), (2) डॉ. (श्रीमती) शशिप्रभा (दिल्ली), (3) पंडित सत्यपाल पथिक (अमृतसर), (4) डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई) को अंगवस्त्र (शाल) ओढ़ाकर 31000/-रूपये की धनराशि तथा प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया। डी.ए.वी. संस्थाओं के पांच प्राचार्यों (1) श्री अनंत सहाय (सीतामढ़ी), (2) श्रीमती मंजू मलिक (दिल्ली), (3) श्रीमती अंजना गुप्ता (अमृतसर), (4) डॉ. विभा राय, (चण्डीगढ़), (5) श्रीमती अजय सरीन (गुरदासपुर) को उनकी सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। डी.ए.वी. पब्लिक(मॉडल स्कूलों के 12वीं कक्षा की बोर्ड-परीक्षा में अधिकतम अंक पाने वाले चार छात्र/छात्राओं (1) सुश्री अंजना मंडल (दुर्गापुर), (2) सुश्री उपासना पाल (दुर्गापुर), (3) मास्टर चेतन धीर (अमृतसर), (4) मास्टर मेहक घई (लुधियाना) को भी सम्मानित किया गया।

डी.ए.वी. की आन-बान-शान की प्रतीक मशाल को नवनियुक्त कुलपति को देते श्री पूनम सूरी जी

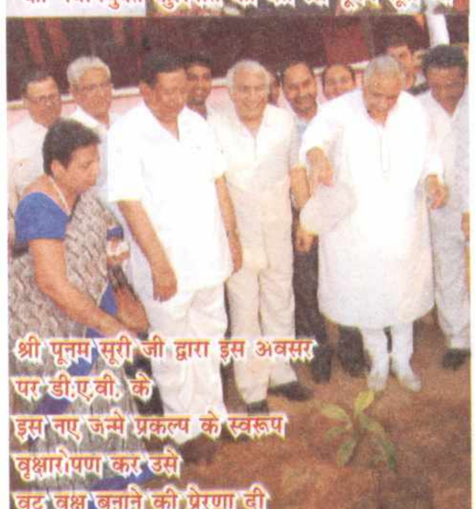

श्री पूनम सूरी जी द्वारा इस अवसर पर डी.ए.वी. के इस नए जन्मे प्रकल्प के स्वरूप वृक्षारोपण कर उसे वट वृक्ष बनाने की प्रेरणा दी

इसके पश्चात् कुलाधिपति श्री पूनम सूरी ने शहनाई, नगाड़ों और शंख के मंगलनाद और वेदमन्त्रों के पावन उच्चारण के बीच डी.ए.वी. विश्वविद्यालय के लोकार्पण की विधिवत् घोषणा की और डा. कोहली को प्रतीक स्वरूप मशाल थमायी। यह अद्भुत आह्लादकारी दृश्य था। स्वामी सुमेधानंदजी ने अपना आध्यात्मिक आशीर्वाद दिया। डी. ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति के उप-प्रधान डॉ. एस. के. सामा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस अवसर पर 'आलोक-पथ' नाम से एक नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की गई जिसमें 6 स्कूलों और एक कॉलेज के 3800 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। एक विशाल मंच पर सुन्दरतम प्रकाश-व्यवस्था में दी गई इस प्रस्तुति का आलेख श्री अजय ठाकुर ने किया और निर्देशन श्री उदय साहा ने दिया।

शांति-पाठ किए जाने से पूर्व 'डी.ए. वी. गान' गाया गया। यह डी.ए.वी. गान श्री अजय ठाकुरजी द्वारा लिखा गया तथा सभी संस्थाओं को यह निर्देश दिया गया कि विद्यालयों में डी.ए.वी. गान प्रत्येक कार्यक्रम की समाप्ति पर अवश्य गाया जाए। देशभर से 20000 से अधिक संख्या में उमड़े जनसमूह ने आयोजन की व्यवस्थाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इस अवसर पर डी.ए.वी. के शिक्षकों को सम्मानित करते श्री पूनम सूरी जी

सुविचार

समय सबसे कम पाया जाने वाला संसाधन है और जब तक इसका प्रबंधन नहीं किया जाता तब तक बाकी किसी चीज का प्रबंधन नहीं किया जा सकता!

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14
Posted at Patrika Channel R.M.S. on 1/2-06-2013
R.N.I. No 68339/98

मुद्रक व प्रकाशक–**रामनाथ सहगल** द्वारा **मयंक प्रिंटर्स,** 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 दूरभाष : 41548504 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : **अजय**